चन्दामामा

मां-बच्चों का मासिक पत्र

Photo by T. S. Satyan

पुरस्कृत परिचयोक्ति

'तुम रहो यहाँ के यहाँ!'

प्रेषक
श्री निरंजन कुमार, जोधपुर

हर कोई आनन्द लेता है....

"TRAVEL" TO

Far Away Lands

WITH

व्यू मास्टर
रु. १५)

COLOR PICTURES
IN 3 DIMENSIONS

व्यूमास्टर रील:
प्रत्येक रु. २)

आइये और हमारे 'व्यू मास्टर' के ३-डी. के सच्चे रंगीन चित्र देखिए जो 'सजीव से लगते हैं।' व्यू मास्टर स्टीरियोस्कोप और प्रोजेक्टरों के लिए प्रत्येक 'व्यू मास्टर' के साथ ७ कार्यक्रम दृश्य देते हैं। परिवार के प्रत्येक सदस्य को रोमांचित करनेवाले ४०० रील हमारे यहाँ प्राप्त हैं। आज ही उन्हें दिखाने का अवसर हमें दें।

कृपया मुफ्त रील-लिस्ट के लिए लिखें :

सोल डिस्ट्रिब्यूटर्स **पटेल इंडिया लिमिटेड** बम्बई, कलकत्ता, नई दिल्ली, मद्रास.

जहाँ हमारे एजेण्ट नहीं हैं, वहाँ एजेण्ट चाहिए।

चन्दामामा

मार्च १९५६

विषय-सूची

वार्षिक चन्दा रु. ४—८—०

एक प्रति रु. ०—६—०

"वाह, कितना बढ़िया चित्र! आपने इसे घर के भीतर कैसे खींचा?"

"मैंने नयी कोडक 'ट्राइ-एक्स' फ़िल्म इस्तेमाल की थी—यह सबसे तेज़ फ़िल्म है।"

धुंधले प्रकाश में बढ़िया चित्र खींचने के लिए आप 'कोडक' ट्राइ-एक्स फ़िल्म पर पूरा भरोसा रख सकते हैं। यह फ़िल्म कोडक 'सुपर-एक्स एक्स' की तुलना में कम से कम दुगनी तेज़ होती है।

याद रखिए, कैमरे में 'कोडक' फ़िल्म के इस्तेमाल से किसी तरह का खतरा नहीं रहता। हमेशा दो रोल खरीदिए—एक इस्तेमाल कीजिए और एक बचाकर रखिए।
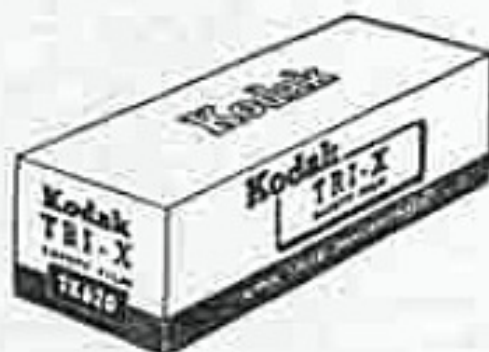
कोडक लिमिटेड
(इंग्लैंड में सम्बद्ध)
बम्बई – कलकत्ता – दिल्ली – मद्रास

चुरमुरा...
ताजा...
स्वादिष्ट...
बढ़िया बिस्कुट
ब्रिटेनिया

बग़ैर फ़्लाश के ही
यह नया

GEVAPAN
36°

गेवापान-३६°

तीव्र गतिवाली रौल फ़िल्म
जो कृत्रिम रोशनी में भी
अच्छा काम देती है।

फ़ोटोग्राफ़ी की श्रेष्ठतम पद्धतियों की खोज करने गेवर्ट की तरफ़ से सालों की वैज्ञानिक गवेषणा की गयी और इसी का परिणाम है : यह नया 'गेवापान-३६°' हा प्रगतिक की रौल फ़िल्म, जो सभी रंगों को उतारने का सामर्थ्य रखती है। खास तौर से इसकी सिफ़ारिश ऐसे अननुकूल प्रकाश में चित्र लेने के लिए की गयी है कि चाहे वह अंधकार का समय हो....या गोधूलि का...., प्राकृतिक रोशनी हो... या कृत्रिम 'घर के भीतरी' प्रकाश, फ़्लाश के बग़ैर भी उपयोग किया जा सकता है। 'गेवापान-३६°' के लिए कोई विशेष डेवलपर की आवश्यकता नहीं है। शार्ट एक्सपोज़र्स के लिए, याने—शीघ्र गति से चलनेवाले मनुष्यों के या जीव-जन्तुओं के चित्र लेने छोटे 'एपार्चर' के उपयोग से दूर के और समीप के दृश्य एक ही बार फ़ोकस में रहने के लिए—यह सर्वोत्तम रौल फ़िल्म है।

ये दो साइज़ में प्राप्त हैं : १२० और ६२०

Allied Photographics Limited

एलाएड फ़ोटोग्राफ़िक्स लिमिटेड,

बहदूरी बिल्डिंग, जमशेदजी टाटा रोड, बम्बई-१

ए. फ़ो. लि० का 'फ़ोटो-मेला' रेडियो सिलोन (४१ मीटर पर)
प्रति शुक्रवार को रात के ८ बजे सुनिये।

चन्दामामा

संचालक : चक्रपाणी

इस महीने में शिवरात्रि आती है। यह हिन्दुओं का व्रत-पर्व है, जो शिव-चतुर्दशी भी कहलाता है।

हम इस अंक में "शिवरात्रि महिमा" के शीर्षक से एक मनोरंजक कहानी दे रहे हैं। आशा है, 'चन्दामामा' के पाठकों को यह पसन्द आयेगी।

पुरातन काल से भारत में धर्म को प्रधानता दी गई है। धर्म के नाम पर कई अन्ध-विश्वास भी प्रचलित हो गये हैं। हमें उनकी तरफ़ ध्यान देना चाहिए और उन्हें दूर करने का प्रयत्न भी करना चाहिए।

पर साधारणतः धर्म के प्रभाव से व्यक्तिगत जीवन नैतिक बनता है, जो अपने आप में, समाज के लिए एक बड़ी देन समझी जा सकती है।

मार्च १९५६

वर्ष : ७
अंक : ७

शेर का व्याह

महारण्य में किसी समय था
रहता एक बली वनराज,
सभी काँपते भय से उसके
कहलाता था वह मृगराज ।

इत्तफ़ाक से रीझ गया इक
मानव-बाला पर उसका मन,
लगा प्रेम उससे वह करने
बिसराकर अपना जंगलीपन ।

बनकर प्रेमिक गया वहाँ वह
जहाँ रहा करती थी रमणी,

कहा पिता से उसके उसने
"ब्याह मुझे दो बेटी अपनी!"

सुनते ही यह बात पिता के
मचा हृदय में हाहाकार,
कैसे बात नहीं यह माने
बलशाली आया है द्वार ।

शत्रु बनाता अगर शेर को
तो प्राणों से धोता हाथ,
इसीलिए यह सोच-समझकर
बोला यही झुकाकर माथ—

"कर दूँगा शादी मैं निश्चय
अपनी बेटी का तब आप,

"जब मेरी भी शर्त इसी क्षण
मानेंगे वन-राजा आप।"

कहा शेर ने खुशी खुशी यह—
"बोलो क्या क्या शर्तें हैं,
सच्चे प्रेमी भला कभी क्या
इन बातों से डरते हैं!"

कहा पिता ने—"तो फिर सुनिये
वेष आप अपना यह छोड़ें,
दाँत और पंजे जो तीखे
उनको ही अब पहले तोड़ें।"

"इतनी-सी ही बात अगर है
तो फिर क्या अब देरी है,

दाँत और पंजे सब ले लो
नहीं उज्र कुछ मेरी है।"

कथन शेर का यह सुनते ही
हुआ मिनट में खेल खतम,
गये निकाले पंजे उसके
और दाँत भी सभी खतम।

दाँत और पंजों को खोकर
शेर गिरा झट खाकर ठोकर,
गये नोंच खा कुत्ते उसको
मरा मौत कुत्ते से बदतर!

मुख - चित्र

कुमार स्वामी और देवसेना के विवाह के अवसर पर, सभी देवी-देवता, दिक्पालक, ब्रह्मा, पार्वती-परमेश्वर वगैरह उपस्थित हुए। फिर, पार्वती और परमेश्वर हज़ार शेरों के रथ पर कुमार स्वामी को बिठाकर 'भद्रवट' की ओर निकल पड़े। रथ के पीछे इन्द्र ऐरावत पर सवार हो आ रहा था। कुमार स्वामी के रथ के एक ओर अष्टवसु, और एकादश रुद्र और दूसरी तरफ़ दिक्पालक और ब्रह्मर्षि आदि थे।

बड़े वैभव के साथ धूमधाम से, कुमार स्वामी सपत्नीक भद्रवट पहुँचा, और सब का आशीर्वाद पा वहीं निवास करने लगा।

थोड़े दिनों बाद, महिषासुर नाम के राक्षस ने, राक्षस-सेनाओं को संगठित करके, देवताओं पर धावा बोल दिया। राक्षसों ने आश्रम नष्ट कर दिये, यज्ञ भग्न किये, निरायुध जनता को डराने-सताने लगे। इनकी रक्षा के लिये आये हुये देवताओं और राक्षसों में भयंकर युद्ध शुरू हुआ। इस युद्ध में देवता महिषासुर से लोहा न ले सके और मैदान छोड़कर भाग गये।

महिषासुर ने ब्रह्मा से कई वर पाये थे, और अब वह विजयोन्मत्त भी था। वह परमेश्वर के निवास पर भी गया। और बड़े गर्व से उसने परमेश्वर का रथ भी पकड़ लिया। यह जान कि महिषासुर ने परमेश्वर को भी हरा दिया है, राक्षस 'जय जयकार' करने लगे।

तब परमेश्वर ने कुमार स्वामी को याद किया। तुरन्त कुमार स्वामी युद्ध के लिये तैयार हो गया। शक्ति को उसने हाथ में पकड़ा, और आग बबूला होता हुआ वह महिषासुर के पास पहुँचा। उसने अपनी शक्ति महिषासुर पर फेंकी। महिषासुर उसकी चोट से ऐसा गिरा, जैसे कोई पहाड़ गिरा हो, और वहीं खतम हो गया। महिषासुर की राक्षस-सेनायें तब कुमार स्वामी पर टूट पड़ीं। परन्तु कुमार स्वामी ने शीघ्र उनको भी साफ़ कर यमपुरी भेज दिया। युद्ध समाप्त हुआ। देवताओं ने कुमार स्वामी पर पुष्प-वर्षा दी।

काशी के राजा, ब्रह्मदत्त के ज़माने में बीणा बजाने वाले के रूप में पैदा हुए। उनका नाम था गुत्तिल। दूर दूर तक यह ख्याति फैली हुयी थी कि जम्बूद्वीप में, वीणा बजाने में उनसे मुकाबला करनेवाला कोई न था। इस कारण, काशी के राजा ने उनको अपने दरबार में नियुक्त कर दिया था।

इस नियुक्ति के कई साल बाद, व्यापार के लिये काशी के कुछ व्यापारी उज्जयिनी गये। गुत्तिल के कारण काशी में, बच्चा बच्चा भी वीणा सुनने में अभिरुचि रखता था। जब से काशी छोड़ी थी, उन्होंने वीणा-वादन न सुना था। उन्होंने उज्जयिनी के व्यापारियों से कहा कि वे उज्जयिनी के सबसे बड़े वीणा बजानेवाले को अपने मुकाम पर बुलाकर संगीत का प्रबन्ध करें।"

उज्जयिनी के मशहूर वीणा बजानेवाले का नाम मूसिल था। काशी के व्यापारियों के विनोद के लिये उसी को बुलाया गया। मूसिल, वीणा लेकर, व्यापारियों के ठहरने की जगह पहुँचा। उसने बहुत देर वीणा बजाई, पर व्यापारियों को न सन्तोष हुआ, न आनन्द ही। मूसिल ने मध्यम श्रुति में गीत बजाये, पर तब भी व्यापारियों ने वाह-वाह न की।

आखिर मूसिल ने कहा—"मैं इतनी देर से आप के सामने वीणा बजा रहा हूँ। क्या आपको मेरा बजाना पसन्द नहीं आया?"

काशी के व्यापारी, एक दूसरे का मुँह देखने लगे। वे हैरान थे। उनमें से एक ने कहा—"तो आप अब तक वीणा बजा रहे थे! पर हम समझ रहे थे कि आप तार

"क्या वे बहुत अच्छा बजाते हैं"—मूसिल ने पूछा।

"उनके बजाने से मुक़ाबला किया जाय तो आपका बजाना ही नहीं लगता।"—व्यापारियों ने कहा।

"ख़ैर, जब तक मैं उनके जितना अच्छा नहीं बजाता, तब तक आराम न लूँगा। आपको मुझे कोई पैसे देने की ज़रूरत नहीं" यह कह मूसिल चला गया। वह उसी दिन, काशी नगर जाकर, बोधिसत्व के घर पहुँचा। बोधिसत्व ने उसको वहाँ देखकर पूछा—"तुम कौन हो?"

"मैं उज्जयिनी का रहनेवाला हूँ। मुझे लोग मूसिल कहते हैं। आपके पास वीणा सीखने आया हूँ। आपकी कृपा से मैं भी आप के समान वीणा बजानेवाला होना चाहता हूँ। यही मेरा उद्देश्य है"—मूसिल ने कहा। बोधिसत्व ने उसको वीणा सिखाना स्वीकार किया।

मूसिल रोज़ घर में वीणा का अभ्यास करता और बोधिसत्व के साथ दरबार में भी जाता। शीघ्र ही सबको विदित हो गया कि वह बोधिसत्व का शिष्य था। कई वर्ष बीत गये। एक दिन बोधिसत्व

ठीक कर रहे हैं।"—दूसरे ने चुटकी ली—"शायद वीणा बिगड़ गई है, कहा सुनती नहीं है, आपको सताती-सी लगती है।"

मूसिल ने मुँह मसोसकर कहा—"तो इसका मतलब है कि आपने मुझसे भी अधिक प्रवीण वीणा बजानेवाले को सुन रखा है। इसीलिये आपको मेरा बजाना पसन्द नहीं आया है। यह तो बताइये कि वह बजानेवाला कौन है?"

"क्या, आपने काशी राज्य के गुत्तिल का नाम नहीं सुना है?"—व्यापारियों ने पूछा।

ने अपने शिष्य से कहा—"तुम्हारी शिक्षा समाप्त हो चुकी है। जितना मैं जानता था, उतना मैंने तुम्हें बता दिया है। अब तुम अपने देश वापिस जा सकते हो।"

परन्तु मूसिल उज्जयिनी वापिस न जाना चाहता था। जब वह कुछ न जानता था, तभी वहाँ के लोगों ने उसको प्रवीण समझ लिया था। 'कुछ भी हो, काशी राज्य में दरबारी वीणा बजानेवाले, बनने में ही कीर्ति है। अब वह बोधिसत्व के समान जानता है। बोधिसत्व वृद्ध भी हो गये हैं। इसलिये काशी-राजा के दरबार में ही आश्रय पाना चाहिये'—उसने सोचा।

मूसिल ने बोधिसत्व से कहा—"मैं उज्जयिनी नहीं जाना चाहता। आप कह ही रहे हैं कि मैं आप के बराबर जान गया हूँ, इसलिये मुझे भी दरबार में, अपने समान कोई नौकरी दिलवा दीजिये।"

बोधिसत्व ने यह बात राजा से कही।

"क्योंकि वह आप का शिष्य है, इसलिये दरबार में उसको नौकरी दे दूँगा, पर उसको आप का आधा वेतन ही मिलेगा। अगर वह मान जाय तो वह नौकरी ले सकता है।"—राजा ने कहा।

बोधिसत्व ने जब यह बात मूसिल से कही, तो उसका सन्तुष्ट होना तो अलग, वह अन्दर ही अन्दर जलने लगा—"वह किस बात में कम है! और बोधिसत्व में उससे अधिक क्या है! फिर मुझे आधा वेतन क्यों दिया जाना चाहिये!"

मूसिल ने राजा के पास जाकर पूछा—"महाप्रभू! मुझे आप आधे वेतन पर नियुक्त कर रहे हैं। जितना मेरे गुरु जानते हैं, उतना मैं भी जानता हूँ। आप चाहे तो गुरुजी से पूछ सकते हैं। जितना वेतन उनको दिया जा रहा है, कृपया

उतना मुझे भी दिलवाइये।" राजा को गुस्सा आ गया। उन्होंने कहा—"मैं तो केवल यह ही जानता हूँ कि तुम गुत्तिल के शिष्य हो। मैं नहीं जानता था कि तुम उनके समान भी हो। जब तक मैं स्वयं तुम्हारी प्रवीणता न देख लूँगा, तब तक मैं विश्वास न करूँगा।"

"चाहें तो आप मेरी परीक्षा करके देख लीजिये।"—मूसिल ने कहा।

"अच्छा! मैं तुम दोनों का मुक़ाबला करवा दूँगा। अगर तुमने भी उतना अच्छा बजाया, जितना कि तुम्हारे गुरु बजाते हैं, तुम्हें भी उतना ही वेतन दूँगा। नहीं तो, तुम्हें दरबार में आने भी न दिया जायेगा।"—राजा ने कहा। मूसिल मान गया।

गुरु और शिष्य, दोनों में साम्मुख्य हुआ। दोनों ने, एक दूसरे से बढ़कर बजाने का प्रयत्न किया। बीच में बोधिसत्व का वीणा का एक तार टूट गया। परन्तु वे बाकी तारों पर ही बजाते गये। यह देख, मूसिल ने जान-बूझकर अपनी वीणा का एक तार तोड़ दिया। फिर बोधिसत्व की वीणा का एक और तार टूट गया। मूसिल ने भी एक और तार तोड़ दिया। कुछ देर बाद बोधिसत्व की वीणा के सब तार टूट गये। मूसिल ने भी अपनी वीणा के सब तार तोड़ दिये। परन्तु बोधिसत्व टूटे हुये तारों पर ही बजाते जाते, थे पर मूसिल वैसा न कर सका। वह अपना-सा मुँह लिये इधर उधर देखने लगा।

दरबारियों ने बोधिसत्व की प्रवीणता की बड़ी प्रशंसा की, और मूसिल का परिहास किया। मूसिल, उसी दिन काशी छोड़कर उज्जयिनी की ओर चल पड़ा।

[८]

[शत्रुओं का मुकाबला नरवाहन और समरसेन ने करना शुरू कर दिया था न! नगर से बाहर, मैदान में घमासान युद्ध हुआ। यद्यपि समरसेन ही जीता था, तो भी वह बुरी तरह घायल हो गया था। नरवाहन ने अपने को राजा घोषित कर दिया था। शिवदत्त ने गुप्त-मार्ग से अपने अनुचरों के साथ राज-महल से भागने की ठानी। बाद में—]

"उस गुप्त-मार्ग से क्या आप पहिले कभी न गये थे?"—मन्दरदेव ने उत्सुकता से पूछा।

शिवदत्त ने सिर हिलाते हुये कहा—"उस से पहिले हमें उस मार्ग से जाने की कभी नौबत न आई थी। परन्तु जब हम उस अन्धकार-मय मार्ग की ओर गये, तो हम जान गये कि बिना रोशनी के आगे जाना असंभव सा था। यद्यपि जल्दी में मैं रोशनी की बात भूल गया था, तो भी मेरे अनुचर इस बारे में पूरे तैयार थे। वे तुरन्त कुछ मशालें जलाकर सुरंग में जा घुसे। रोशनी हो गई। मैं भी चला। इतने में एक ने पीछे से कहा—"सेनानी! शत्रु, फाटक तोड़कर अन्दर घुस गये हैं। सुनिये, वे शोर भी कर रहे हैं। वे हमें ही खोजते नज़र आते हैं। अब क्या किया जाय?"

"अच्छा! तो दरवाज़ा बन्द कर दो। नरवाहन जब तक नहीं आ जाता, तब तक

यह गुप्त-मार्ग वे न जान सकेंगे। और इस बीच में हम सुरक्षित बाहर भी निकल जायेंगे। घबराओ मत, धीरज धरो।"—मैंने कहा।

उस सुरंग में, हम थोड़ी दूर ही गये थे, कि हमें लोहे की जंज़ीरें लटकती हुयी दिखाई दीं। मैंने सिर उठाकर देखा—सुरंग के ऊपरले भाग में एक दरवाज़ा-सा लगा। मैंने जंज़ीर जो खींची कि यकायक पानी गिरने लगा। तब मुझे तुरंत मालूम हो गया कि वहाँ वह दरवाज़ा क्यों लगा रखा था। मैंने सन्तोष की साँस ली और आगे की बात सोचने लगा।

अगर शत्रु गुप्त-मार्ग मालूम कर पीछा करने लगे, तो उस दरवाज़े को खोल कर वहाँ तक का रास्ता जलमय किया जा सकता था। यह अच्छा उपाय था। उस उपाय को बरतने की ज़रूरत है कि नहीं, यह सोचता सोचता मैं गुप्त-मार्ग के दरवाज़े की ओर देखने लगा। वहाँ शत्रु मशालें लेकर, कुछ खोजते-से लगते थे। इसका मतलब यह हुआ कि उन्हें हमारा ठिकाना-पता लग गया था। आगे-पीछे सोचने का समय न था। मैंने पूरे ज़ोर से लोहे की जंज़ीर खींची। तुरन्त वह दरवाज़ा, सुरंग के बीचों-बीच आ गिरा और उसके आगे पानी भयंकर रूप से गरजने लगा, मानों कोई झरना गिर रहा हो। दरवाज़े के होने के कारण, पानी हमारे रास्ते में नहीं आ रहा था। उसने पानी का प्रवाह रोक रखा था।

अब हमें जल्द से जल्द सुरंग से बाहर निकल जाना चाहिये था। अगर देरी हो गई तो नरवाहन हमें, जङ्गल में, चारों ओर से घेर लेगा। अगर वह ऐसा कर सकेगा तो हमारी हालत पिंजड़े में फँसे चूहों की तरह

हो जायेगी; मुझे यह आशंका होने लगी। थोड़ी देर में हम सुरंग के परले सिरे तक पहुँचे। वहाँ, ऊपर की ओर सीढ़ियाँ जाती थीं और सीढ़ियों के अन्त में एक दरवाज़ा था। हम सीढ़ियों पर चढ़कर दरवाज़े तक गये, और कान लगाकर ध्यान से सुनने लगे कि कहीं कोई वहाँ बाहर तो नहीं है।

वह प्रदेश निश्शब्द जान पड़ता था। हमें गुप्त-द्वार खोलकर बाहर जाने में ही अक़्लमन्दी दिखाई दी। मैंने ज़ंग खाये हुये, दरवाज़े के सींखचों को हिलाया ही था कि परली तरफ़ घोड़ों का हिनहिनाना सुनाई दिया। मनुष्यों की बातें भी हो रही थीं। मैं सहसा चौंका।

"सब कुछ ठीक है। गुप्त-मार्ग का द्वार अभी बन्द है।"—एक ने धीमे से कहा।

"अच्छा! तो वे सब बाग़ी, पानी में डूब-डाब गये होंगे। मर गये होंगे।"—दूसरे व्यक्ति ने सन्तोष भरी आवाज़ में कहा।

इतने में एक कड़ी आवाज़ उधर से सुनाई दी। वह निश्चय ही किसी अधिकारी की आवाज़ मालूम होती थी।

"इतनी दूर खड़े होकर बातें करने से काम नहीं चलेगा। हम नहीं जानते कि वे बाग़ी पानी में डूब गये हैं, या हमसे बचकर पहिले ही जंगल में भाग गये हैं। अलावा इसके, अगर शिवदत्त के सिर को, वह चाहे मरा हो या ज़िन्दा, हम ले जा सकें, तो नरवाहन ने हमें जागीरें देने का वचन दिया है।" यों वह अधिकारी चिल्ला रहा था।

"हम सब कुछ करने के लिए तैयार हैं, अब आपका क्या हुक्म है!"—उन दोनों व्यक्तियों ने एक साथ पूछा।

"जाकर उस पेड़ की थाल में जो खुफिया दरवाजा है, उसे खोलकर देखो। अगर सुरंग पूरी तरह पानी से भर गई है, तो ढूँढ़ने पर भी हमें शिवदत्त का शव न मिलेगा। वह मर चुका होगा। अगर पानी न हो तो.... "

उसकी बात पूरी होने के पहिले ही, द्वार के पास से कई शेरों का भयंकर गर्जन सुनाई दिया। नरवाहन के सैनिकों का, घोड़ों को लेकर, पीछे हटने का शब्द भी सुनाई दिया। "उस पेड़ के पास शेर हैं। खतरा है। पीछे हटो!"—एक चिल्लाया। पर तुरन्त उनके अधिकारी की कर्कश ध्वनि सुनाई दी—"शेर तो क्या, अगर वहाँ हाथी और भालू भी हों, तो बिना काम पूरा किये पीछे नहीं हट सकते। खबरदार! नहीं तो मेरी तलवार के शिकार हो जाओगे। डरपोक कहीं के। बढ़ो आगे"

उसके बाद ऐसा लगा, जैसे शेर उन पर कूद पड़े हों। भयंकर गर्जन, सैनिकों का चीत्कार सुनाई दिया। हमें बाहर जाने का इससे अच्छा मौका मिलना मुश्किल था। नरवाहन के सैनिक शेरों को मार कर, जरूर हमें मारने के लिए गुप्त-मार्ग के द्वार

पर थोड़ी देर में आते। भाग्य हमारा साथ देता लगता था।

मैंने अपने अनुचरों को यह बात समझायी। मेरी बात सब ने मान ली। जब नरवाहन के सैनिक शेरों से भिड़ रहे थे, तो हम सब का या तो उनसे मुक़ाबला करना, नहीं तो जङ्गल में भाग जाना अच्छा था। इसी में अक़्लमन्दी थी।

मैं सरदार था। मुझ पर बहुत जिम्मेवारियाँ थीं; जिम्मेवारियों के कारण मैं कुछ घबरा-सा रहा था। मेरी आज्ञाओं पर ही, मेरे और मेरे अनुचरों का भविष्य निर्भर था। मेरे साथ या तो वे मृत्यु पायेंगे, नहीं तो कहीं सुरक्षित पहुँचेंगे, यह थोड़ी देर में ही पता लगनेवाला था। मैंने अपने को ढाढ़स बँधाया।

मैंने तुरन्त गुप्त-मार्ग का दरवाज़ा खोल दिया। जंग खाये हुये वे किवाड़ आवाज़ करते हुये खुले। बाहर देखता हूँ तो वहाँ भयंकर दृश्य था। एक क्षण मैंने आँखें मूँद लीं।

वहाँ शेर दो-एक न थे, पाँच-छे बड़े-छोटे शेर, सैनिकों और घोड़ों से भिड़ रहे थे। सैनिक क़रीब क़रीब बीस थे। वे
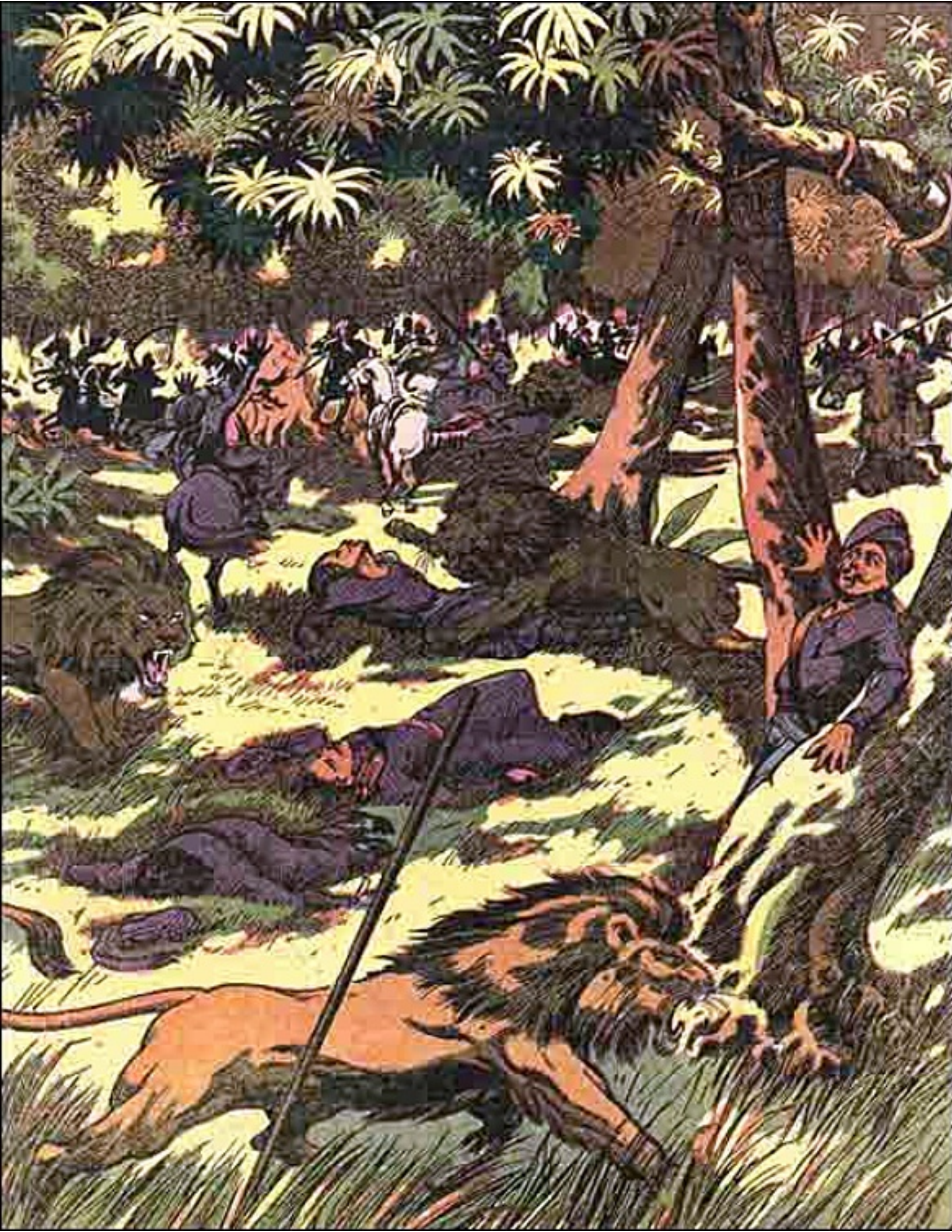
पेड़ों के झुरमुट में फँस-से गये थे। वे गरजते हुये सिंहों के पंजों की पकड़ से भाग भी न पाते थे, और न वे अपने बरछों से उन्हें मार ही पाते थे। उनके प्राण-पखेरू उड़ रहे थे। वे लहू-लुहान हो रहे थे, भयभीत थे। थोड़ी दूर पर घोड़े पर सवार हो, उनका सरदार हवा में तलवार घुमा रहा था।

"घबराओ मत! मारो, काटो।"—वह चिल्ला रहा था। पर वह स्वयं शेरों के पास नहीं जा रहा था। और तो और, वह वहाँ से भाग जाने की फ़िक्र में भी लगता था। वह अपना घोड़ा पीछे हटा रहा था। वह मौके की तलाश में भी था।

मेरा और मेरे अनुचरों को गुप्त-मार्ग से बाहर आना, न तो सैनिकों ने देखा था, न उनके सरदार ने ही। वे अपनी जान बचाने की ही फ़िक्र में थे। मैं अपने अनुचरों को लेकर पेड़ों के झुरमुट में से छुके-छुपे नरवाहन के सैनिकों के पीछे जा पहुँचा। उनको एक तरफ़ से तो शेर सता ही रहे थे, मैं उनको दूसरी तरफ़ से यकायक ख़तम कर देना चाहता था। इसी में हमारी भलाई थी।

मेरे अनुचरों की भी यही राय थी। परन्तु एक दो-सैनिकों को यह भी डर था कि शेर, जो अब नरवाहन के सैनिकों से भिड़े हुये थे, उन पर आ कूदेंगे। जब मरना ही है, तो शत्रुओं के हाथ मारे जाने में या शेरों द्वारा मारे जाने में अधिक फ़र्क न था, मैंने उनको बताया। पेड़ों के पीछे से "समरसेन की जय" चिल्लाता, मैं नरवाहन के सैनिकों पर कूदा। मेरे अनुचर भी यह ही चिल्लाते हुए शेरों की तरह उन पर लपके। वे बहुत घबरा गये।

पहिले पहल, मेरी तल्वार की चोट से उनके सरदार का सिर, उछलता-कूदता, पेड़ों की थाल में आ गिरा। अनुचर भी, जिसको जहाँ नरवाहन का सैनिक मिला, उसको वहीं खतम कर रहे थे। उस भिडन्त में, किसी को भी शेरों की न पड़ी थी। दो-तीन शेर तो नरवाहन के सैनिकों के बरछे की चोट खा छटपटा रहे थे और बाकी डर के मारे इधर उधर भाग रहे थे। मैदान साफ़ हो रहा था।

चार-पाँच मिनट में, नरवाहन के कई सैनिक हमारी तल्वारों के शिकार हुए। इससे पहिले कि वे जान पाते कि उन पर कौन हमला कर रहे थे कि वे ठण्डे पड गये। परन्तु उनमें से एक गला फाड़-फाड़कर चिल्ला रहा था।

"यह शिवदत्त है। द्रोही को मारो। यह एक और राज्य कायम कर देगा। हम ज़रूर जीतेंगे, नहीं तो स्वर्ग है ही।"—कहता, वह बब्बर शेर की तरह हम पर तल्वार लेकर कूदा।

उसका साहस देखकर, साथ के सैनिकों को भी हिम्मत होती-सी लगी। वे सब के सब एक साथ हमारे अनुचरों पर कूदे। मेरे दो-चार अनुचर, जो यह सोचे बैठे थे कि उनकी विजय हो गई है, उनके धावा का मुक़ाबला न कर सके, वे मारे गये। आफ़त को आता देख, मैंने उस सरदार के घोड़े को भोंका। घोड़ा दोनों पैरों के बल खड़ा हो गया और सवार नीचे गिर गया। घायल घोड़ा उसको रौंदता भाग निकला।

इस घटना के बाद नरवाहन के सैनिकों को मारने में बहुत देर न लगी। परन्तु पेड़ों के पीछे पीछे, दो-चार सैनिक भाग गये थे, यह मुझे बाद में ही मालूम हुआ।

(अभी और है)

अक़्ल के मारे

कोई सौदागर, ऊँट पर अपना माल लादे सफ़र कर रहा था। ऊँट पर अधिक बोझ लदा था। थोड़ी दूर बाद वह एक क़दम भी आगे न चल सका। सौदागर ने एक और ऊँट खरीदने की ठानी, ताकि वह माल दोनों ऊँटों पर आसानी से लादा जा सके।

उसने अपने आदमियों से कहा—"ठहरो! मैं एक और ऊँट खरीद ले आऊँ। अगर इस बीच में बारिश हो, तो बक्सों को भीगने से बचाना।"

जब वह गया हुआ था तो बारिश हुई। उसके आदमियों ने बक्सों में से तुरन्त माल बाहर निकाला और माल से बक्सों को ढँक दिया, ताकि वे भीगे नहीं।

जब सौदागर एक और ऊँट को लेकर वापिस लौटा तो उसका सारा माल भीगा पड़ा था।

"तुम बेवक़ूफ़ों ने यह क्या किया है!"—सौदागर ने गुस्से में उनसे पूछा।

"मालिक! आप ही ने तो कहा था कि हम बक्सों को भीगने से बचायें। हमने वही तो किया है।"

सौदागर को मालूम हो गया कि उन अक़्ल के मारों से, अक़्ल की बातें करने से कोई फ़ायदा न था।

मूर्ख की "अक़्लमन्दी"

कोई मूर्ख समुद्र-यात्रा कर रहा था। समुद्र में, नाव के सिरे पर झुका वह कुछ देख रहा था कि उसके जेब में से एक रुपया पानी में गिर गया।

"नाव रोको! मेरा एक रुपया गिर गया है।"—वह चिल्लाया।

पर मल्लाहों ने नाव रोकने से इनकार कर दिया। उन्होंने कहा—"हम नाव नहीं रोक सकते। हमें अन्धेरा होने से पहिले किनारे पहुँचना है।"

"अच्छा, ख़ैर"—मूर्ख ने कहा—"यहाँ के बुलबुले याद रखना, ताकि हम वापसी यात्रा में इस स्थान को पहिचान सकें, और मैं अपना खोया हुआ रुपया वहाँ ढूँढ़कर निकाल सकूँ।"

उसका पिता कौन है?

विक्रमार्क ने हार न मानी। वह फिर पेड़ पर से शव उतारकर, उसको कन्धे पर डाल, चुपचाप श्मशान की ओर चला। तब शव में स्थित वेताल ने यों कहा : "राजा! मेरे कारण तुम्हें बहुत मेहनत करनी पड़ रही है। इसलिए तुम्हें एक आश्चर्य भरी कहानी सुनाता हूँ। सुनो!" उसने यह निम्न कहानी सुनायी :

ताम्रलिप्ति नामक नगर में एक वैश्य रहा करता था। उसके एक लड़की थी, जिसका नाम धनवती था। उसके बड़े होने के बाद, जब उसके पिता उसके विवाह के बारे में दौड़-धूप कर रहा था कि वह दुर्भाग्यवश मर गया।

जब वह मरा, धन-सम्पत्ति तो अलग, वह बहुत-सा कर्ज़ छोड़ता गया। यह सोच

कि कर्ज़वाले उनके सारे गहने ले जायेंगे, और धनवती के पहिनने के लिए भी गहने न रहेंगे, वैश्य की पत्नी, अपनी लड़की के साथ, आधी रात के घने अन्धेरे में, किसी और देश के लिए निकल पड़ी।

जब वे शहर पारकर, वध्य-स्थल में से जा रहे थे, तो वैश्य की पत्नी का हाथ, एक चोर के शरीर पर लगा। उसको उसी दिन फ़ाँसी दी गयी थी। दर्द के मारे कराहते हुए उसने कहा—'हाय! मैं पहिले ही मर रहा था और अब यह कौन सता रहा है?"

"अन्धेरा है, दिखायी नहीं दिया, बेटा!"—वैश्य की पत्नी ने कहा।

"आप कौन हैं? इस समय कहाँ जा रही हैं?"—चोर ने पूछा।

"मैं वैश्य-स्त्री हूँ। यह मेरी लड़की है। मेरे पति गुज़र गये हैं; इस शहर में अब हमारा कोई नहीं है। कहीं और जाकर मैं अपनी लड़की का विवाह कर देना चाहती हूँ।"—वैश्य की पत्नी ने कहा।

चोर ने थोड़ी देर सोचकर कहा—"माँ! मैं तो मर ही रहा हूँ। परन्तु न तो मेरी शादी हुई है, न बाल-बच्चे ही हैं। सन्तान न होने के कारण मुझे पुण्य-लोक भी न मिलेगा। इसलिये आप अपनी लड़की को मुझे दे दें। उसके बाद, जो इसके बच्चे होंगे, वे मेरे भी होंगे। मुझे पुण्य-लोक मिल सकेगा। अगर आपने मेरा उपकार किया, तो मैं आपको बता दूँगा कि मैंने अपना सारा चोरी का माल कहाँ छुपा रखा है। उस माल से आप और आपकी लड़की, कहीं भी जाकर आराम से रह सकती हैं।"

धन के लालच में, वैश्य की पत्नी ने अपनी लड़की धनवती को मरते चोर के साथ विवाह करने का निश्चय किया।

"जो वहाँ बड़ का पेड़ दिखाई देता है न, उसी के नीचे मैंने सोना गाड़ रखा है। मेरे मरने से पहिले जाकर वह सोना निकाल लो और मेरे मर जाने के बाद मेरा दहन-संस्कार कर, मेरी अस्थियों को पानी में मिलाना। पास में ही वक्रोलक नाम का नगर है। उस नगर का राजा बहुत अच्छा है। उसके राज्य में प्रजा बड़े सुख से रह रही है। आप लोग वहीं जाना।"—चोर ने सलाह दी।

उसकी सलाह के अनुसार वैश्य की पत्नी ने चोर के छुपाये हुए सोने को लेकर अपनी लड़की के साथ वक्रोलक चली गई। वहाँ से उसने आदमी भेजकर चोर के शव को मँगवाया, उसका दहन-संस्कार करवाया, और उसकी अस्थियाँ भी पानी में मिलवा दीं। इस तरह उसने चोर को दिया हुआ अपना वचन पूरा किया।

वक्रोलक में एक ब्राह्मण नवयुवक रहा करता था। उसका नाम विष्णु स्वामी था। यह जुआड़ी और निकम्मा था, परन्तु देखने में वह बहुत खूबसूरत था। विष्णु स्वामी के कानों में यह बात पड़ी कि वैश्य जाति की दो स्त्रियाँ, बहुत-सा धन लेकर उस नगर में रहने आयी हैं। उसने उनका परिचय प्राप्त किया, और धनवती की माँ के सामने, उसने धनवती से विवाह करने की इच्छा प्रकट की। विष्णु स्वामी की शक्ल-सूरत देखकर धनवती का विवाह उसके साथ करने के लिये वह मान भी गई।

विवाह होने की देर थी कि विष्णु स्वामी धनवती को पैसे के लिये तंग करने लगा। धनवती पैसा दे भी देती, पर उसकी माँ ने विष्णु स्वामी की दाल न गलने दी। इस तरह कुछ दिन बीत गये और धनवती के एक लड़का भी पैदा हुआ।

"अब तो तुम एक लड़के के बाप भी बन गये हो। पर अभी तक तुम अपनी जिम्मेवारियाँ नहीं जानते हो। बाहर जाकर पैसा कमाकर लाओ।"—विष्णु स्वामी की सास दिन-रात उसके नाक में दम करने लगी। विष्णु स्वामी अपनी पत्नी और लड़के को छोड़कर कहीं चला गया।

थोड़े दिनों बाद वैश्य की पत्नी की मृत्यु हो गई। धनवती को जीवन से वैराग्य हो गया। अब तक वह माँ की साया में जीती आई थी। लड़के को पालती-पोसती वह जीवन न बिता सकी। उसने लड़के को, गली के बीचों-बीच, पलंग डालकर उस पर लिटा दिया और उसकी बग़ल में अपना सारा धन रखकर वह कहीं चली गई। उसने सोचा कि वह लड़का अगर किसी ग़रीब को मिल गया तो उस धन से उसका वह अच्छी तरह पालन-पोषण करेगा। उसे बड़ा करेगा और पढ़ा-लिखा भी सकेगा।

परन्तु वह बच्चा, उस देश के राजा को ही मिला। जब वह सवेरे सवेरे घोड़े पर सवार हो, शहर का दौरा कर रहा था, तो उसको गली के बीचों-बीच एक पलंग पर एक बच्चा, और बच्चे की बग़ल में बहुत-सा धन दिखाई दिया। राजा के कोई बच्चा न था। बहुत पूजा-पाठ किया, व्रत किये, पर उसको सन्तान न हुई थी। उसने सोचा कि भगवान ने शायद उसी रूप में उसको सन्तान दे दी। बच्चा बहुत सुन्दर था। राजा, बच्चे और उसके धन को, सिपाहियों द्वारा उठाकर अपने राज महल में ले गया।

बच्चे का नाम चन्द्रप्रभु रखा गया। वह बड़े लाड़-प्यार से पाला गया। उसको सब विद्याएँ सिखाई गयीं। उसको किसी चीज़ की कमी न थी। यथा समय उसको उस देश का युवराज भी बनाया गया।

फिर काल-क्रम से बूढ़े राजा की मृत्यु हो गई। चन्द्रप्रभु ने शास्त्रोक्त विधि से पिता का दहन-संस्कार करवाया, और प्रयाग में, त्रिवेणी में उनका तर्पण भी किया। वह फिर पिता का श्राद्ध करने गया भी गया। जब वह श्राद्ध पिण्ड—गया कूप में डाल ही रहा था तो पानी में तीन हाथ बाहर निकले। उनमें से एक हाथ, चोर का था। क्योंकि उस पर जँज़ीरों के निशान थे, दूसरा ब्राह्मण का था, और तीसरा राजा का। उसकी उँगुली में अँगूठी थी।"

यह कहानी सुनाकर बेताल ने पूछा—"राजा, चन्द्रप्रभु को चोर के हाथ में पिण्ड रखना चाहिये या अपने पिता ब्राह्मण के हाथ में, या राजा के हाथ में, जिसने उसको पाल-पोस कर राज दिया था! अगर तुमने जान बूझकर जवाब न बताया तो तुम्हारा सिर फोड़ दूँगा!"

"वह पिण्ड चोर को मिलना चाहिये, इसमें कोई भी सन्देह नहीं है। क्योंकि चन्द्रप्रभु चोर का ही लड़का है और उन दोनों का नहीं। विष्णु स्वामी ने धन के कारण धनवती के साथ विवाह किया था और राजा ने, चन्द्रप्रभु का चन्द्रप्रभु के रुपये-पैसे से ही पालन-पोषण किया था। धनवती चोर को दे दी गई थी। इस उद्देश्य से कि उसकी सन्तान उसको पिण्ड चढ़ायेगी, चोर ने उसको अपनाया था। चोर के धन के लिये ही विष्णु स्वामी ने धनवती से विवाह किया था। उस चोर के धन से ही राजा ने उसको पाला-पोसा था। इसलिये चोर को ही चन्द्रप्रभु का श्राद्ध-पिण्ड मिलाना चाहिये।" - विक्रमार्क ने जवाब दिया।

इस प्रकार राजा के मौन का भंग होते ही, बेताल शव के साथ अदृश्य होकर फिर पेड़ पर जा बैठा।

बेवकूफ़ कंजूस

एक मूर्ख ने एक नौकर रख रखा था। साल के अन्त में, मालिक ने नौकर को वेतन देकर उसको चलता किया। क्योंकि उसका ख्याल था कि नौकरों को रखना बहुत खर्चीला था।

पर उसकी पत्नी नौकर को पसन्द करती थी, क्योंकि वह बहुत मेहनती और वफ़ादार था। इसलिये जब वह जा रहा था तो मालकिन ने उसको एक पैसे की बख़्शीश दी।

नौकर उसको धन्यवाद देकर अपने गाँव चला गया। जब मियाँ-बीबी में, नौकर के बारे में बात चली तो पत्नी ने कहा—"हमें उसे भेज देना नहीं चाहिये था! हमें उस जैसा दूसरा नौकर नहीं मिल सकता। जो कुछ सेवा उसने हमारी की, मैंने उसके बदले में, उसको एक पैसा बख़्शीश में दिया था।"

"मैंने तो उसका वेतन, पाई पाई चुकता कर दिया था। उसको तुम से एक पैसा लेने का कोई हक़ न था। मैं जब तक वह पैसा वापिस वसूल न कर लूँगा, तब तक न सोऊँगा।"—उसके पति ने कहा।

मूर्ख तुरन्त नौकर के गाँव गया। वहाँ उसने उससे पैसा वसूल भी कर लिया। पर नौकर का गाँव आने-जाने में उसका पूरा एक रुपया खर्च हुआ।

होशियार ज़िराफ़

पाटलीपुत्र में दीक्षित नाम का एक ग़रीब पंडित रहा करता था। उसके, बहुत दिनों बाद एक लड़का पैदा हुआ। उसका नाम उसने यज्ञदत्त रखा। बड़े प्रेम से माँ-बाप यज्ञदत्त का पालन-पोषण करने लगे। दीक्षित रोज़ राज महल में आया-जाया करता। इसलिये वह अपने लड़के की शिक्षा के बारे में उचित ध्यान न दे सका। और माँ के लाड़ ने यज्ञदत्त को बिगाड़ दिया।

कुछ समय बाद यज्ञदत्त का उपनयन-संस्कार कर, उसको गुरु के पास शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेजा गया। परन्तु यज्ञदत्त को शिक्षा की अपेक्षा, जुए का अधिक चाव था। वह जुए में पैसा हार जाता, कर्ज़ लेता, और कर्ज़ चुकाने के लिए समय समय पर उसकी माँ कोई गहना निकालकर उसको दे दिया करती।

जब कभी दीक्षित लड़के के बारे में पूछा करता तो उसकी पत्नी कहा करती— "हाँ, वह तो बहुत अच्छा पढ़-लिख रहा है।" क्योंकि उसकी माँ उसका हमेशा साथ देती थी और यज्ञदत्त दिन प्रति दिन और भी बिगड़ता गया।

एक बार जब दीक्षित राज-दरबार से लौट रहा था, तो उसने रास्ते में, एक आदमी की अँगुली में अपनी हीरे की अँगूठी देखी। उसने तुरत उस आदमी को रोका और अँगूठी पहिचानकर पूछा— "यह अँगूठी तेरे पास कहाँ से आई?"

"आपका लड़का मुझ से जुए में हार गया था। कर्ज़ के बदले में उसने यह अँगूठी दी है।" "तो क्या हमारा लड़का जुआ खेलता है?" दीक्षित ने बड़े आश्चर्य से उस आदमी से पूछा।

श्रीमती डी. मंजुलता

“क्या आप यह नहीं जानते? सिवाय इसके वह चौबीसों घंटे कुछ करता ही नहीं।”—उस आदमी ने जवाब दिया।

दीक्षित को बहुत गुस्सा आया। वह शर्मिन्दा भी हुआ। उसने घर जाकर सन्दूक खोलकर देखा, तो हीरे की अँगूठी के अलावा कई और सोने की चीज़ें ग़ायब थीं।

“इस तरह के लड़के से अच्छा नरक ही है। अरे! ज़रा तिल लाओ, इसका अभी ही तर्पण किये देता हूँ।”—दीक्षित ने पत्नी से कहा।

यह सुन उसकी पत्नी खौल उठी, और वह यज्ञदत्त का साथ देने लगी। उसने यह न जाना कि दीक्षित ने यह बात किस हालत में कही थी। दीक्षित जान गया कि उसकी पत्नी की छूट के कारण ही यज्ञदत्त इतना बिगड़ गया था। वह अपनी पत्नी और पुत्र को डाँटने-डपटने लगा।

तभी यज्ञदत्त घर की ओर आ रहा था। पिता को चिल्लाता देख, वह जान गया कि उसका भेद खुल गया है। वह घर जाने का साहस न कर सका। वह झट वापिस लौटा और शहर छोड़कर कहीं जाने लगा। जब वह जंगल के रास्ते से आ रहा था तो कुछ चोरों ने उसको देखा। उसकी शक्ल सूरत, वेष-भूषा देख कर, उन्होंने सोचा कि वह कोई रईस है। उन्होंने उसको खूब मारा-पीटा। वह बेहोश होकर गिर गया। चोरों के उसके पास से एक कानी-कौड़ी भी न मिली। अगर उसको वहीं छोड़ देते तो सबेरे कोई आकर उसकी खोज करता और उनका गुप्त-स्थान मालूम कर लेता। इसलिये वे उसे एक गाँव में ढोकर ले गये, और छोड़ आये।

गाँव का एक किसान, जब सबेरे सबेरे घर से बाहर आया तो उसको गली में

यज्ञदत्त पड़ा हुआ दिखाई दिया। किसान ने उसको अन्दर ले जाकर खाना खिलाया और उसकी चिकित्सा भी करवाई। यज्ञदत्त थोड़े दिनों में ही स्वस्थ हो गया।

उस किसान की लड़की अभी कुँआरी थी। यज्ञदत्त ने उससे परिचय कर मैत्री कर ली, और एक दिन रात को, किसान को बिना कहे उसको साथ लेकर चल पड़ा। दोनों सफ़र करते करते, एक हरिजनवाड़े में पहुँचे। यज्ञदत्त ने सोचा कि उनका हरिजनवाड़े में ही छुपे रहना अच्छा है। नहीं तो कोई देख लेता।"

पर यज्ञदत्त हरिजनवाड़े में क्या करता! इसलिये वह वहाँ थोड़े दिन ठहर कर, पत्नी के साथ एक शहर में पहुँचा। उसने चोरों से दोस्ती कर ली, और खुद चोरी करता हुआ जीने लगा। एक दिन यज्ञदत्त के पकड़े जाने की नौबत आई। इस विपत्ति से बचने के लिए, उसको पत्नी को साथ लेकर फिर शहर छोड़कर जाना पड़ा।

इस तरह यज्ञदत्त कहीं भी जमकर रह नहीं सका। वह घूमता घूमता काशी नगर पहुँचा। वहाँ भी चोरी करते करते उसने जैसे तैसे कुछ दिन बिताये।

इस बीच में शिवरात्रि आई। शिवरात्रि के मौके पर, काशी में यात्रियों की भीड़ लग जाती है। सब के पास पैसे और गहने होते हैं। यह सोचकर कि उसका दारिद्य खतम हो जायेगा, यज्ञदत्त ने सवेरे जाकर गँगा में स्नान किया। हज़ारों भक्त, अपने कपड़े किनारे रख, स्नान कर रहे थे। क्योंकि हर जगह सिपाही तैनात थे, इसलिए यज्ञदत्त कुछ न कर सका।

गँगा से निकल्कर, सिपाहियों से बचने के लिए, वह विश्वेश्वरालय में पहुँचा। कई स्त्री-पुरुष मन्दिर की प्रदक्षिणा कर रहे थे। उनकी तरह यज्ञदत्त भी मन्दिर की प्रदक्षिणा करने लगा। परन्तु एक चीज़ भी चुराने का मौका उसको न मिला।

सूर्यास्त हो गया। यज्ञदत्त उस दिन पानी भी न पिया था। भूख के मारे मरा जाता था। वह मन्दिर के अन्दर गया। वहाँ शिव-पूजा हो रही थी। उसने एक शिव-भक्त को शिव-अर्चना के लिए, एक हँडिया में चतुर्विध अन्न रख कर, एक कोने में मन्त्र जपते देखा। वह भी एक भक्त की तरह उसके पास बैठकर, पूजा करने का अभिनय करने लगा।

रात धीमे धीमे बीत गई। अरुणोदय होने को था। शिव-भक्त नींद न रोक सका, वह आँखें मूँदकर ऊँघने लगा। यह मौका देख, यज्ञदत्त ने दीये की बत्ती ज़रा बढ़ाई और उसकी रोशनी में, वह हंडिया लेकर दौड़ा, पर ग़लती से उसका पैर शिव-भक्त को लगा।

शिवभक्त आँखें खोलकर तुरन्त चिल्लाया—"चोर चोर।" फ़ौरन कई चोर का पीछा करने लगे। यज्ञदत्त भी तेज़ी से, सब से बचता हुआ दौड़ने लगा। रास्ते में एक जल्लाद खड़ा था। उसने एक चोर को भागता देखकर, अपने धनुष पर बाण चढ़ाया और यज्ञदत्त को निशाना बनाकर छोड़ दिया। बाण उसके कलेजे पर लगा। वह वहीं ठण्डा पड़ गया। यज्ञदत्त को लेने के लिए, एक तरफ़ यम के किंकर और दूसरी तरफ़ विष्णु के अनुचर भी आये।

यम के किंकरों ने विष्णु के अनुचरों को वहाँ देखकर आश्चर्य से पूछा—"तुम इसके लिए क्यों आये हो? इसने जन्म भर में एक भी अच्छा काम न किया। यह जुआेबाज़, धोखेबाज़, चोर और डाकू है।"

"यह सब ठीक है। पर शिवरात्रि के दिन यह सवेरे सवेरे उठा, और गँगा में स्नान करके आया और सारा दिन शिवालय की प्रदक्षिणा करता रहा। दिन भर इसने उपवास भी किया। रात भर जाग कर, उसने शिव-पूजा की।"

यम के किंकरों को, यम की आज्ञा का पालन करना था। वे यज्ञदत्त को पकड़ने के लिए आगे बढ़े। पर बहुत कोशिश करने पर भी, वे यज्ञदत्त को पकड़ न सके। उनके देखते देखते, विष्णु के अनुचर यज्ञदत्त को विमान में बिठाकर स्वर्ग ले गये।

बादल और पर्वत

[श्री श्याम सुन्दर अशान्त, पटना-६]

एक बार बादल पर्वत में हुआ बहुत ही झगड़ा,
अभिमानी पर्वत ने बादल को कस कर के रगड़ा,
कहा नहीं कुछ दम है तुम में, तुम से बड़ी हवा है,
जिसके एहसानों से तेरा जीवन घुटा-दबा है।
उसका बल पाकर ही तू नभ में इतराता फिरता,
कभी बरसता पानी बनकर, कभी मेघ बन घिरता,
जिधर चाहती है वह तुझ को तुरत उड़ा ले जाती,
कभी न रुकने देती, हरदम तुझ पर हुकुम चलाती
मुझ को देखो मुझ में कितनी गरिमा, कितना बल है,
कितनी दृढ़ता है, मेरा यह आसन अडिग अचल है।
बादल बोला—सच कहते हैं, आप बहुत बलशाली,
कहा आपने जो कुछ भी वे बातें बड़ी निराली।
दृढ़ता, बल, गरिमा इनका मैं बहुत मान करता हूँ,
ये सब गुण पूजा के काबिल मैं इन पर मरता हूँ।
लेकिन मैं पूछता आप से क्रुद्ध नहीं हों मुझ पर,
क्या मुझ में सब अवगुण ही हैं, गुण न एक भी भूधर?
क्या मेरी ही तरह आप भी जल बरसा सकते हैं?
क्या मेरी ही तरह आप भी फूल खिला सकते हैं?
मेरी मंद मृदुल ध्वनि सुन कर कृषक तृप्त हो जाते,
मेरे सँग सँग अगनित पौधे हँसते औ' मुस्काते,
मैं अपने को मिटा खेत की हरियाली बन जाता,
कर अपना बलिदान जगत में जीवन नया जगाता।
देख किसी का दुःख आप को दया नहीं आ पाती,
आँख आप की जैसी की जैसी सूखी रह जाती,
मैं छोटा हूँ, आप बड़े हैं, जो कहना हो कहिये,
लेकिन ऐसे एक जगह ही पड़े पड़े मत रहिये,
यह कह करके बादल आगे बढ़ा विहँसता गाता,
जीवन का क्या लक्ष्य सबक यह पर्वत को सिखलाता।

राजा भोज, नये श्लोक के लिए एक एक लाख रुपये देते थे; यह जानकर कई कवि नीच-कार्य भी करने लगे। यह धारणा लोगों में बन गयी थी कि राजा नया श्लोक चाहते थे, भले ही श्लोक के भाव उचित हों या न हों। यह सोच शतंजय नाम के एक कवि ने यह श्लोक लिखा :

"अपशब्द शतं माघे
भारवौच शतत्रयं
कालिदासे नगण्यन्ते
कविरेक श्शतंजयः"

यह होने को तो नया श्लोक है, पर इसका अर्थ यों है—"माघ की रचनाओं में सौ अपशब्द हैं। भारवी की रचनाओं में तीन सौ अपशब्द; कालिदास की रचनाओं में अपशब्द असंख्य हैं। शतंजय ही एकमात्र कवि है।"

इस श्लोक में शतंजय ने केवल अपने को कवि ही नहीं कहा; अपितु कालिदास, भारवी, माघ जैसे महान कवियों की निन्दा भी की। यद्यपि यह निन्दा निराधार थी, तो भी शतंजय ने यह सोचा था कि राजा इसके लिए लाख रुपये देगा। कवि-दिग्गजों की निन्दा कर, पुरस्कार प्राप्त कर, राजा भोज का परिहास करना भी शतंजय का उद्देश्य था।

परन्तु, शतंजय में इतनी हिम्मत न थी कि स्वयं जाकर राजा भोज के समक्ष यह श्लोक सुनाये। इसलिए उसने अपने एक शिष्य को बुलाकर कहा—"जाओ, इस श्लोक को ले जाकर राजा भोज के दरबार में सुनाओ। यह बिलकुल नया श्लोक है, इसके लिए राजा भोज अवश्य एक लाख रुपये देगा; ले आओ!"

श्री महेशचन्द्र वर्मा

जब शतंजय का शिष्य श्लोक लेकर राजमहल की ओर जा रहा था, तो उसको रास्ते में कालिदास दिखायी दिया। परन्तु शिष्य को न मालूम था कि वे कालिदास थे।

"क्या आप दरबार में जा रहे हैं?" उस शिष्य ने कालिदास से पूछा।

"हाँ! क्यों, क्या बात है?"—कालिदास ने पूछा।

"क्या, मुझे भी आप अपने साथ दरबार में ले चलेंगे?"—शिष्य ने पूछा।

"तुम्हें दरबार में क्या काम है?"—कालिदास ने उससे पूछा।

"मेरे गुरुजी ने एक श्लोक लिखकर दिया है। श्लोक को राजा के समक्ष पढ़कर पुरस्कार ले आने के लिए उन्होंने कहा है!"—शिष्य ने कहा।

'कवि स्वयं क्यों नहीं आ रहा है; अपने शिष्य को ही क्यों भेज रहा है!' कालिदास को सन्देह हुआ। उसने कहा—"देखें, श्लोक कहाँ है!"

शिष्य ने शतंजय का लिखा श्लोक कालिदास के हाथ में रख दिया। उसको पढ़ते ही, कवि की नीच-बुद्धि कालिदास ताड़ गया। उन्होंने इधर-उधर देखा और फिर श्लोक

वापिस करते हुए कहा—"एक ग़लती रह गयी है; नहीं तो ज़रूर ईनाम मिलता!"

"अगर आप वह ग़लती जानते हैं तो ठीक कर दीजिये। अगर बिना ईनाम पाये, ख़ाली हाथ वापिस गया तो गुरुजी गुस्सा करेंगे!" शिष्य, कालिदास के सामने गिड़गिड़ाने लगा।

कालिदास ने श्लोक के पहले अक्षर "अ" को "आ" बना दिया। इस छोटे-से परिवर्तन से सारे श्लोक का अर्थ ही बदल गया।

शतंजय का शिष्य कालिदास के साथ दरबार में गया। उसने नये श्लोक सुनाने की राजा की अनुमति ली। कालिदास द्वारा बदले-हुए श्लोक को उसने पढ़ कर यों सुनाया :

"आप शब्द शतं माघे
भारवौ शतत्रयं
कालिदासे नगण्यन्ते
कविरेक शतंजयः"

अब श्लोक का अर्थ इस प्रकार है : "शतंजय नाम के एक कवि ने माघ से सौ शब्द लिये, भारवी से तीन सौ और कालिदास से असंख्य।"

यह श्लोक सुनते ही, राजा भोज और दरबारी अट्टहास करने लगे। शतंजय का शिष्य बड़ा शर्मिन्दा हुआ। उसने गुरु के पास जाकर जो कुछ गुज़रा था, कह सुनाया। यह देखकर कि उसकी मान-मर्यादा मिट्टी में मिल गयी है, शतंजय कवि धारा नगर को छोड़ कर कहीं और चला गया।

बाद में कालिदास ने, राजा भोज और दरबारियों को शतंजय कवि के बारे में सारी बातें सविस्तार बतायीं। सभी ने कालिदास की बड़ी प्रशंसा की।

चालाक माँ-बेटी

[२]

दिलैला ने सूफ़ी सन्यासिनी का वेश उतार दिया और वह किसी रईस की नौकरानी का वेश पहिनकर अपनी चालाकी से फिर बग़दाद की जनता को सताने लगी। जब वह गली में जा रही थी तो उसको एक घर में बाजे-गाजे, गाना-बजाना, नाचना, शोर-शराबा सुनाई दिया। घर के बराण्डे में एक गुलाम स्त्री एक छोटे लड़के को गोदी में लेकर बैठी हुई थी। उस बच्चे के शरीर पर, बहुत सारे क़ीमती गहने और ज़रीदार कपड़े थे।

उस घर का मालिक, बग़दाद के बड़े व्यापारियों में गिना जाता था। वह बड़ा रईस था। उस दिन उसकी लड़की की सगाई हो रही थी। कई सारी स्त्रियाँ आई हुयी थीं। व्यापारी की पत्नी अतिथियों की आवभगत में व्यस्त थी और उसका छोटा लड़का उसको पकड़कर रोने लगा। इसलिये उसने बच्चे को गुलाम स्त्री को दे दिया था। ये सब बातें दिलैला ने गली में ही मालूम कर ली थीं। उसने उस लड़के के शरीर से गहने हथियाने की सोची।

दिलैला, धकमपेल करती हुई, बराण्डे में पहुँची। उसने यकायक ज़ोर से कहा—"हो भला मेरा; मैंने देरी कर ही दी।" फिर उसने एक खोटा सिक्का गुलाम स्त्री के हाथ में रखते हुए कहा—"आपकी पुरानी दाई, उमाल खयर, सलाम करने आई है, यह ज़रा मालकिन से तो कह आ।" गुलाम ने सिक्का लेते हुये कहा—"अगर लड़के ने माँ को देख लिया तो पता नहीं छोड़ेंगे। मैं कैसे जाकर कहूँ?"

कुमारी रज़िया रेहाना

"जा! मैं बच्चे को पकड़े रहूँगी।"—दिलैला ने कहा। गुलाम ने उसकी बात पर यक़ीन कर लिया। बच्चा दिलैला को सौंपकर वह अन्दर चली गई।

तुरंत दिलैला, लड़के को एक सुनसान गली में ले गई, और उसके शरीर पर से उसने सब जेवर-जवाहरात उतार लिये। कपड़े भी ले लिये। फिर उसको लेकर एक बड़े जौहरी के पास गई। जौहरी ने रईस के लड़के को पहिचान कर दिलैला से पूछा—"तुम्हारे मालिक को क्या चाहिये!" "इस लड़के की बहिन की सगाई हो रही है। एक जोड़ी सोने की चूड़ियाँ, दो जोड़ी सोने की पाजेब, हीरोंवाली सोलह बालियाँ, हीरों से जड़ा कमरबन्द चाहिये। हज़ार दीनार से कम का सामान मत दीजिये। माल ले जाकर मालकिन को दिखाऊँगी। अगर उन्हें जंच गया तो अभी पैसा ले आऊँगी। यदि आप चाहें तो बच्चे को यहीं छोड़े जाती हूँ।"—दिलैला ने कहा। "जैसी तेरी मर्ज़ी। लड़के को यहाँ छोड़कर जाने की ज़रूरत नहीं है।"—जौहरी ने कहा। चोरी का माल लेकर दिलैला घर चली गई।

उधर रईस के घर में, सगाई की खुशी की जगह मातम मनाया जाने लगा। सारे घर में हाहाकार मचा हुआ था। रईस की पत्नी लड़के के लिए छाती पीट पीटकर रो रही थी। लड़के का ठिकाना किसी को न मालूम था। बहुत खोजने के बाद, आखिर में, लड़का जौहरी की दुकान में मिला।

"अरे, बेईमान! चोर!! मेरे लड़के को यहाँ क्यों लाया है? उसके गहने वगैरह कहाँ हैं?"—रईस ने बड़े गुस्से में पूछा।

"आपके घर मैंने हज़ार दीनारों के गहने भेजे हैं। उनके बारे में आपका क्या कहना है?"—जौहरी घबराहट में हकलाने लगा।

दोनों को, एक दूसरे को समझने के लिए काफ़ी समय लगा। इस बीच में, वे तीन लोग भी वहाँ आ पहुँचे, जिनको दिलैला ने चकमा दिया था। यह मालूम हो गया कि सबको एक ही व्यक्ति ने धोखा दिया था। उन्होंने एक दूसरे की कथा आपस में सुनाई।

"जब तक मैं इस बुढ़िया को ढूँढ़ नहीं लेता हूँ, तब तक मैं न सोऊँगा।" रईस ने क़सम खाई। रईस ने बाकी लोगों

से कहा—"मैं भी आपके साथ, बुढ़िया को ढूँढ़ने निकलूँगा। मगर सबके एक साथ ढूँढ़ने से काम नहीं चलेगा। सब कोई अपने अपने तरीके से ढूँढ़ें। दुपहर को सब के सब नाई हज़ मसूद की दुकान पर मिलेंगे।"

दुपहर को जब गधेवाला लड़का नाई मसूद की दुकान के पास से जा रहा था तो उसे दिलैला दिखाई दी। यद्यपि उसने वेश बदल रखा था, तो भी उसने उसको पहिचानकर पूछा—"मिल गया, चोर कहीं का! मैं तुझे ही खोज रहा था।"

"क्यों बेटा! यह क्या कह रहे हो?"—दिलैला ने मासूम चेहरा बनाकर कहा।

"गधी कहीं की! पहिले मेरा गधा वापिस दे, फिर बात करना।"—लड़के ने कहा।

"चिल्लाते क्यों हो? क्या मैं तेरा गधा ले गई थी? मसूद के पास रखा हुआ है। मेरे साथ आ। तेरा गधा दिलाये देती हूँ।"—दिलैला ने कहा। गधेवाला उसके पीछे चल दिया। उसको दुकान के बाहर छोड़ दिलैला अन्दर जाकर, मसूद के सामने रोने लगी—"बाबू! तुझे इसका फ़ैसला करना ही होगा।"

"क्यों चाची, क्या बात है? कहो भी।"—मसूद ने कहा।

"देख बेटा! वह जो बाहर खड़ा है, वह मेरा लड़का है। बीमार हो गया था, मुश्किल से बचा है। मगर दिमाग़ खराब हो गया है। बचपन में उसके पास कभी एक गधा था। उसी के दिन-रात सपने लेता रहता है। हर वक्त 'गधा! गधा!!' चिलाता रहता है। तू ही उसकी अक़्ल ठीक कर सकता है।"—दिलैला ने कहा। दिलैला के दिये हुए दीनार को जेब में

रखते हुए, मसूद ने कहा—"यह कितना बड़ा काम है! सिर घोट कर, दो चार बार निम्बू का रस पोता कि नहीं, बीमारी काफ़ूर हो जायेगी।"

"मना-मनाकर, उसे बुला ले! उसका इलाज ठीक तरह से करना। तेरा एहसान न भूलूँगी।"—दिलैला ने कहा। मसूद ने घर के बाहर जाकर, लड़के को देखकर कहा—"आ, अन्दर आ,"

"मेरा गधा कहाँ है?"—लड़के ने पूछा।

"तेरा गधा मेरे पास है। गधा भला कहाँ जायेगा! ज़रा अन्दर तो आ।"—नाई मसूद ने कहा।

लड़के का वराण्डे में आना था कि मसूद के नौकरों ने उसके हाथ बाँध दिये। मसूद ने उसका सिर घोट दिया। निम्बू का रस लगाने लगा। लड़का चिल्लाने लगा।

मसूद जब इलाज पूरा करके अपनी दूकान के अन्दर गया तो बुढ़िया का पता न था। और तो और, वहाँ रखे, कैंची, उस्तरे, शीशे, तेल, इत्र, कुर्सी, मेज़ वग़ैरह सब ग़ायब थे।

मसूद ने लड़के का गला पकड़कर ज़ोर से पूछा—"तेरी माँ कहाँ है? बता भी"

"मेरी माँ के गुज़रे तो अर्सा हो गया है। तूने मेरा गधा देने के लिये कहा था। झट दे दे।" सिर को पोंछते हुए लड़के ने नाई मसूद से कहा।

जब वे आपस में लड़-झगड़ रहे थे तो बाकी लोग भी वहाँ आ पहुँचे। उनको मालूम हुआ कि बुढ़िया उनकी आँखों में फिर धूल झोंक गई थी। नाई मसूद भी उनके साथ बुढ़िया को ढूँढ़ने निकल पड़ा।

जब वे बहुत-सी गलियों में, घूम-फिर कर एक जगह खड़े हुये, तो गधेवाले लड़के

को फिर एक बार दिलैला दिखाई दी। दीखते ही वह उस पर टूट पड़ा। "वह है, वह चोर बुढ़िया, इस बार बचकर न जाने देना।"—वह चिल्लाने लगा।

सब मिलकर उसको खालिद के घर ले गये। वहाँ उन्होंने सिपाहियों से कहा—"हमें फ़ौरन खालिद के दर्शन करने हैं।"

खालिद सो रहा था। उनके उठने तक सिपाहियों ने उनको इन्तज़ार करने को कहा। मर्दों को वहीं एक जगह बैठा दिया, और दिलैला को जनाने के एक कमरे में ले गये। दिलैला उस कमरे में से अन्दर चली गई। कई कमरे पारकर, दुमंज़िले में, वह खालिद की पत्नी के कमरे में गई। सलाम करके दिलैला ने कहा—"पाँचों गुलामों के लिये आपके पति ने बारह सौ दीनार देने का वादा किया है। मैं उनको ले आई हूँ। मालूम हुआ है कि वे सो रहे हैं। न जाने वे कबतक सोते रहें।"

खालिद की पत्नी ने कहा—"वह तो मैं नहीं जानती। पर, हाँ! उन्होंने एक बार गुलामों के खरीदने के बारे में ज़रूर कहा था। कहाँ हैं तुम्हारे गुलाम?"

"बाहर ही हैं। खिड़की में से दिखाई दे सकते हैं। सब अच्छे खानदान के हैं। किसी भी प्रकार का कोई दोष उनमें नहीं।"—दिलैला ने कहा।

बाहर बैठे हुये पाँचों आदमियों को देखकर खालिद की पत्नी को बड़ी तसल्ली हुई। उसने दिलैला से कहा—"पैसे तो मैं ही दे देती। पर मेरे पास इस समय एक हज़ार दीनार ही हैं। क्या करूँ!"

"हज़ार तो काफ़ी हैं न! मैंने दो सौ तो पहिले ही पेशगी में ले लिये थे।" दिलैला ने कहा। हज़ार दीनार लेकर, उसने सलाम करते हुये कहा—"आपने मेरा बड़ा एहसान किया है कि बिना इन्तज़ार करवाये ही तुरन्त पैसे दे दिये। मैं अपने गुलामों के चेहरे देख नहीं पाऊँगी। मैं बहुत दुखी हूँ। मुझे मेहरबानी करके पिछवाड़े में से भिजवा दीजिये।"

खालिद जब सोकर उठा तो उसकी पत्नी ने कहा—"सचमुच आपने अच्छा भाव किया है।" फिर उसने गुलामों के बारे में कहा।

सब सुनकर खालिद ने आश्चर्य से पूछा—"गुलाम! कौन से! क्या भाव! मैंने तो किसी को कोई पेशगी नहीं दी है।"

"यह क्या कह रहे हैं! मैंने तो बुढ़िया को हज़ार दीनारें भी दे दी हैं। पाँचों गुलाम नीचे खड़े हैं।"—खालिद की पत्नी ने कहा। खालिद जल्दी जल्दी नीचे उतरा। वहाँ उसने इन्तज़ार करते हुये, दुकानदार, रंगरेज़, जौहरी, नाई मसूद, और गधेवाले लड़के को देखा।

"क्या तुम ही हो मेरे खरीदे हुए गुलाम!"—उसने उनसे पूछा।

"आपका इन्साफ़ क्या यही है! क्या हम गुलाम हैं! चलिये खलीफ़ा से पूछें।" —उन लोगों ने कहा।

उसी समय मुस्तफ़ा भी वहाँ आया। इस बीच में बुढ़िया ने उसकी पत्नी को कैसे धोखा दिया था, वह जान गया था। उसने खालिद से पूछा—"आपकी देखरेख में, लगता है, हर बुढ़िया, जिस घर में, जब चाहे तब, जो चाहे, सो कर सकती है। मेरी पत्नी के धोखे के बारे में क्या करने का इरादा है!"

खालिद ने घबराते हुए कहा—"हुज़ूर, इस बुढ़िया को पकड़ने की, और सज़ा देने की जिम्मेवारी मेरी रही। आप सब को हरज़ाना देने की जिम्मेवारी भी मेरी रही।" उसने बाकी लोगों की तरफ़ देखते हुए पूछा—"आप में से उसको कौन पहिचान सकते हैं!"

पाँचों ने बताया कि वे पहिचान सकते हैं। "अगर आपने हमें दस सिपाही दे दिये, तो हम उसको पकड़वा भी देंगे।" —उन्होंने खालिद से कहा।

सिपाहियों को लेकर वे थोड़ी दूर गये थे कि बुढ़िया उनके सामने से भाग गई। पर उन्होंने उसका पीछा करके उसको पकड़ लिया और हाथ बाँधकर, वे खालिद के पास ले गये। परन्तु.... (अभी और है)

बताओगे ?

१. वह कौन-सी बृहत् योजना है, जिसको हैदराबाद और आन्ध्र की सरकारें संयुक्त रूप से कार्यान्वित कर रही हैं ?

२. क्या इस वर्ष किसी फ़िल्म निर्माता को, बच्चों की सुन्दर फ़िल्म बनाने के लिये प्रधान मन्त्री का पदक मिला है ?

३. सूडान कहाँ है ? वह अब परतन्त्र है या स्वतन्त्र ?

४. हिन्दी की प्रसिद्ध छायावादी कवयित्री का नाम बताओ ?

५. केन्द्रीय सरकार के शिक्षा मन्त्री कौन हैं ?

६. भारत में केन्द्रीय सरकार द्वारा परिचालित कितने विश्व विद्यालय हैं ?

७. निखिल बंग साहित्य सम्मेलन का पिछला अधिवेशन कहाँ हुआ, और उसके कौन अध्यक्ष थे ?

८. मराठी भाषा की लिपि क्या है ?

९. सिवाय स्व. रवीन्द्रनाथ ठाकुर के कोई ऐसे भारतीय लेखक का नाम बताओ, जिसने नोबुल प्राईज़ प्राप्त किया हो।

१०. बुद्ध गया कहाँ है ? और क्यों प्रसिद्ध है ?

पिछले महीने के 'बताओगे ?' के प्रश्नों के उत्तर :

१. ७,९,२६,५६.

२. चिरापूंजी.

३. हज़ारीबाग़, अजमेर, ट्रावनकोर, आन्ध्र.

४. हिमालय की ऊँची पहाड़ियों में, तिब्बत और उसके समीपके प्रदेश.

५. अबीसीनिया.

६. १७.३ प्रतिशत.

७. केसरी, सफ़ेद, हरा—तीनों समान भागों में हैं।

८. सर ऐन्थोनी ईडन.

९. श्री गोपाल रेड्डी.

१०. तेलुगु, इसके बोलनेवालों की संख्या ३,२९,९९,९१६ है।

भाई की सूझ

सरयू नदी के किनारे, धनु नाम का महामुनि एक आश्रम बनाकर तपस्या किया करता था। एक दिन महामुनि को केले के पेड़ों के बीच में एक बच्ची दिखाई दी। मुनि उसको अपने आश्रम में ले गया। उसका नाम उन्होंने कदली रखा और अपनी पुत्री की तरह वे उसका दिन-रात पालन पोषण करने लगे।

कदली सयानी हुई। उसी समय मध्यदेश का राजा दृढ़वर्मा, शिकार खेलता खेलता उस इलाके में आया। महामुनि के दर्शन करने के लिये वह उनके आश्रम में भी गया। वहाँ कदली को देखकर, राजा को उसके साथ विवाह करने की इच्छा हुई।

तुरन्त राजा ने महामुनि के पैरों पर पड़कर निवेदन किया—"स्वामी! मेरी एक इच्छा है। अगर आप कहें कि आप उसे पूरा कर देंगे तो बताता हूँ।"

महामुनि ने आसानी से राजा की इच्छा जान ली कि वह कदली से विवाह करना चाहता है।

"राजन्! मुझे अपनी लड़की का आपसे विवाह कर देने में कोई आपत्ति नहीं है। पर कदली का पालन-पोषण अन्तःपुर में नहीं हुआ है। वह आश्रम में ही बड़ी हुई है। अगर आप यह वचन दें कि उसको आप अपने प्राण से भी अधिक देखेंगे, तो मैं विवाह करने के लिये तैयार हूँ।"—धनु महामुनि ने कहा।

"मैं उसको अपने प्राणों से भी अधिक समझूँगा।"—राजा ने वचन दिया। शुभ मुहूर्त में महामुनि ने शास्त्रोक्त विधि के अनुसार दोनों का विवाह कर दिया।

जब कदली राजा के साथ जाने लगी तो उसकी सहेलियों ने कहा—"कहते हैं

श्री राज नारायण

कि राजाओं के अन्तःपुर सोने के पिंजड़े हैं। क्या पता कि तुम वहाँ सुखी रह सकोगी कि नहीं? अगर मन न लगे तो यहीं वापिस आ जाना। पर तुम्हें लिवा लेने के लिये यहाँ कोई न होगा। इसलिये जाते समय रास्ते भर में ये सरसों के बीज बिखेरते जाना। ये जल्दी ही उग आयेंगे। और जब एक पौधा सूखेगा, तो उसकी बगल में ही नये पौधे उग आयेंगे। उनको निशान समझकर, तुम आश्रम आसानी से पहुँच सकोगी।" सहेलियों ने सरसों के बीज़ों की पोटली उसको दे दी।

राजा अपनी नई पत्नी को लेकर मध्य देश पहुँचा। रास्ते भर कदली सरसों के बीज डालती गई।

कदली जब से अन्तःपुर आई, तब से राजा ने अपनी बड़ी रानी का मुँह भी न देखा। दरबार ख़तम होते ही, वह कदली के महल में चला जाता, और वहीं नृत्य, संगीत से मनोरंजन करता। वहीं खाता-पीता, सोता, और वहीं से दरबार में जाता।

यह सब देखकर, बड़ी रानी को बहुत गुस्सा आया। उसने मन्त्री को बुलाकर कहा—"राजा, नई पत्नी के चुंगल में ऐसे फँसे हैं कि मुझे भूल ही गये हैं। उनको चुंगल से निकालने का कोई तरीका बताइये।"

यह सुनते ही मन्त्री को ऐसा लगा, जैसे किसी ने सीसा घोलकर उसके कानों में डाल दिया हो। "इस तरह के नीच काम करने के लिये कितनी ही नीच औरतें हैं। आप मुझसे क्यों यह पूछती हैं?"

रानी ने तुरन्त अपनी ग़लती महसूस करते हुये कहा—"राजा से सम्बन्धित बात है, इस वजह से मैंने आपसे कहा। अगर आप इसे अनुचित समझते हैं, तो भला मैं

ही क्यों करने को कहती?"—उसने पछताने का ढोंग किया।

बाद में, बड़ी रानी ने चुपचाप एक नीच औरत को अन्तःपुर बुलाकर, उसको खूब धन का लालच दिया और कहा कि चाहे जैसे भी हो, वह कदली को मार दे।

यह नीच औरत, विष वगैरह देने में बहुत पहुँची हुई थी। धन के लालच में, उसने छोटी रानी को मार देने का वचन दिया। परन्तु उसे डर लगा कि यदि उसने स्वयं ही सारा काम किया तो कहीं उसी की जान पर आफ़त न आ पड़े। इसलिये उसने शहर में आकर एक नाई की मदद माँगी।

"अगर तूने छोटी रानी को पार लगा दिया, तो जो कुछ बड़ी रानी मुझे देंगी, उसमें से आधा मैं तुझे दूँगी।"—उस नीच औरत ने नाई से कहा।

नाई ने सोच-विचार कर कहा—"छोटी रानी को मारना कोई आसान काम नहीं है। राजा उन पर जान देते हैं। हाँ, एक बात ज़रूर की जा सकती है। बड़ी रानी से यह पूछकर मालूम करो कि क्या यह

काफ़ी है कि अगर राजा का मन छोटी रानी पर से हटा दिया जाय।"

उस औरत ने यह बात बड़ी रानी से कही। "जब तक छोटी रानी जिन्दा हैं, राजा किसी हालत में उनको न छोड़ेंगे। इसीलिये मैंने उसको मार देने के लिये कहा था। अगर तुम कहती हो कि बिना मारे ही राजा उसको छोड़ देंगे, तो इससे अच्छा और क्या हो सकता है?"—बड़ी रानी ने कहा।

एक दिन रात को, नाई श्मशान में गया और वहाँ से कपाल, हड्डियाँ वग़ैरह इकट्ठा कर लाया। उनको पोटली में रख, वह बड़ी रानी के पास पहुँचा। "रानी जी! इन हड्डियों को रात में, छुपे छुपे छोटी रानी के चौके में रखवा दीजिये। बाद को, राजा तक यह बात पहुँचाइये कि छोटी रानी पिशाचिनी हैं। कहिये कि सारे घर की तलाशी ली जाय। जब ये हड्डियाँ उनकी नज़र में पड़ेंगी, तभी वे विश्वास कर लेंगे। वे छोटी रानी को अन्तःपुर से भेज देंगे।"—नाई ने कहा।

बड़ी रानी ने सन्तुष्ट होकर नाई को बहुत-सा सोना ईनाम में दिया। नाई की चाल चल गई। राजा ने पहिले तो विश्वास
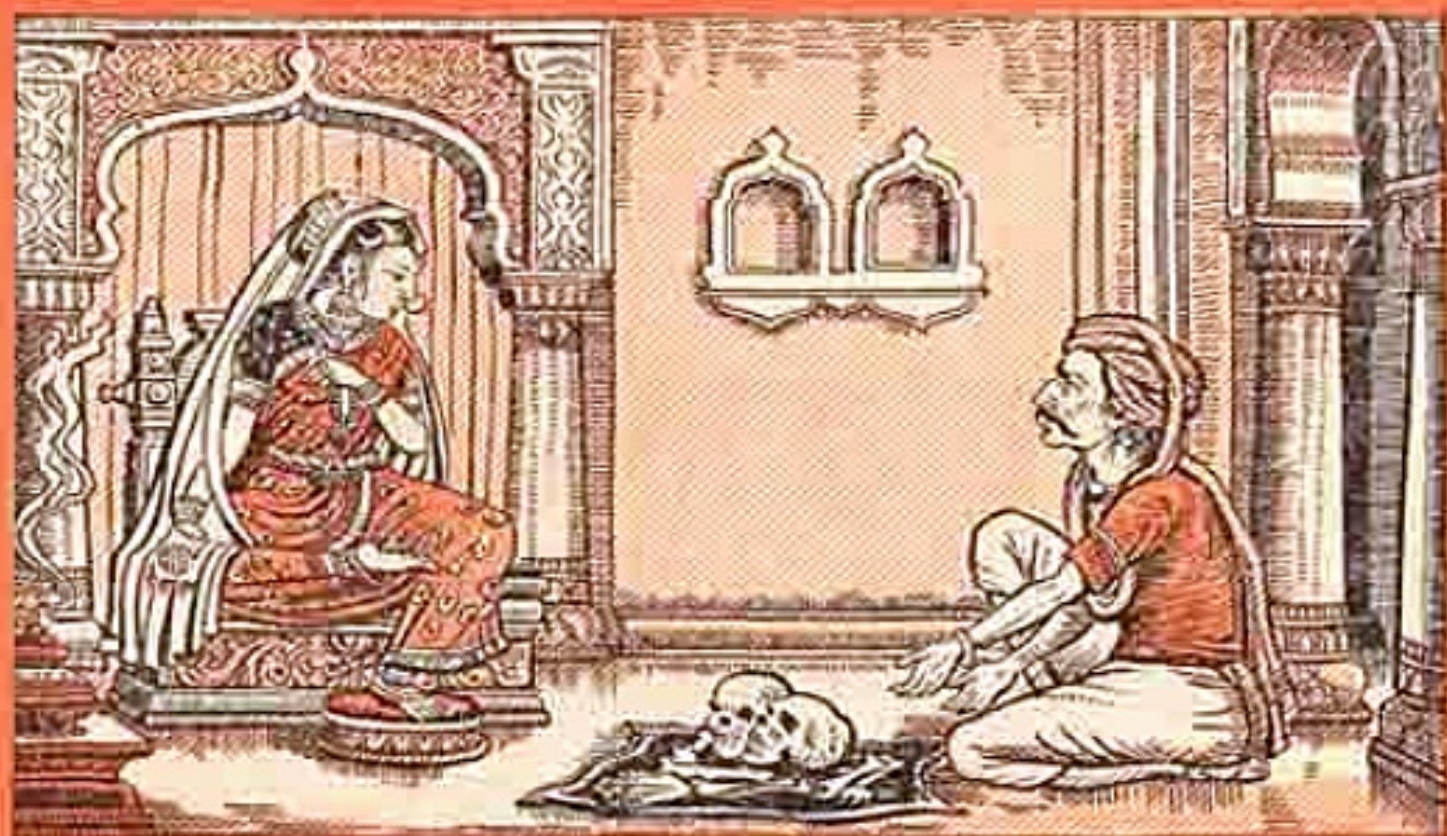
नहीं किया कि छोटी रानी पिशाचिन थी। पर जब चौके में, मनुष्य की हड्डियाँ दिखाई दीं, तो उन्हें यक़ीन हो गया। उन्होंने कदली को घर से बाहर कर दिया। कदली, सरसों के पेड़ के सहारे पैदल धनु महामुनि के आश्रम में पहुँची।

सारे शहर में यह बात फैल गई कि राजा ने अपनी छोटी रानी को घर से भेज दिया है। नाई तो इसकी इन्तज़ारी में था ही। वह तुरन्त राजा के दर्शन के लिये गया। जब उसने कहा कि वह एक ख़ास बात एकान्त में कहना चाहता था, तो राजा ने नाई को अपने पास आने दिया।

"कितना अन्याय हुआ है, हुजूर! आपने एक निर्दोष पत्नी को घर से हटा दिया है। इस में मैंने भी कुछ अनजाने कर दिया है।"—नाई ने कहा। "तूने क्या किया है? जल्दी कहो।"—राजा ने कहा।

"दो दिन पहिले मुझे बड़ी रानी ने बुलाकर कहा कि अगर कहीं मनुष्य की हड्डियाँ मिलें तो ले आओ। मैं उनके लिये हड्डियाँ ढूँढ ढाँढ कर ले आया। मुझे क्या मालूम था कि इतना अन्याय होगा।"—नाई यकायक रोने लगा।

राजा ने उसको बहुत-सा ईनाम देकर भेज दिया। बाद में, बड़ी रानी को क़ैद में बन्द कर उनके विरुद्ध मुक़द्दमा चलाया गया। बड़ी रानी ने मान लिया कि उसने ही छोटी रानी के विरुद्ध षड़यंत्र किया था। राजा ने उसको बड़ी रानी के पद से हटा दिया। वह फिर धनु महामुनि के आश्रम में गया। महामुनि को साष्टांग नमस्कार कर उसने क्षमा माँगी। कदली से भी माफ़ी ली। वह फिर कदली को अपने अन्तःपुर में ले गया, और उसको बड़ी रानी बनाकर उसके साथ सुख से रहने लगा।

हमारी भूमि–२

भूमंडल में, कुछ भाग पृथ्वी क्यों है, और कुछ भाग जल क्यों? यद्यपि भूमि गोल है, परन्तु उसका ऊपरला भाग, गोली की तरह न चिकना है, न गोल ही। वह ऊबड़खाबड़ है। सब से ऊपरला भाग एवरेस्ट है—इसकी ऊँचाई २९,१४१ फीट है। और सब से बड़ा गढ़ा ३५,६०० फीट गहरा है। इसलिये भूमि की मोटाई, जिसके बारे में हम जानते है, वह इन दोनों की दूरी है—यानी १२ मील।

अगर यह मान भी लिया जाय कि भूमि का ऊपरला भाग, समान और गोली की तरह है, तब भी भूमि का पानी इसको चारों तरफ़ से घेर लेगा। क्या अनुमान कर सकते हो कि इस पानी की गहराई कितनी होगी? नौ हज़ार फुट। तब इस भूमि में, सिवाय जलचरों के कोई न रह सकेगा।

परन्तु भूमि के इस तरह असमान होने के कारण हैं। यह धरातल पत्थरों का है। जो हम खेतों में मिट्टी, और रेगिस्तान में रेत देखते हैं, वह बहुत गहरी नहीं है, उसके नीचे पत्थर ही हैं। वे पत्थर दो प्रकार के हैं—एक हल्का, और दूसरा उससे कुछ भारी। भूमि के खोदने पर जो पत्थर मिलता है, वह पहिली तरह का है। उस पत्थर के नीचे दूसरी तरह का पत्थर है, जो मीलों चला गया है। समुद्र की तह में, यह दूसरी प्रकार का, भारी पत्थर ही होता है।

जब सारी भूमि मे हमें हल्का ही पत्थर दिखाई देता है, तो हम कैसे कह सकते हैं कि इससे भारी पत्थर भी हैं? जब ज्वालामुखी फूटती है, और लावा निकलता है, तब ये ही पत्थर बाहर आते हैं। जब लावा जम जाता है, तो वह मामूली पत्थर से कहीं भारी होता है।

इस तरह हम जान सकते हैं कि यह भूमंडल क्यों दो भागों में बँटा हुआ है! जहाँ जहाँ हल्का पत्थर था, वह समतल भूमि के रूप में दिखाई देता है, और जहाँ दूसरे भारी पत्थर हैं, वहाँ समुद्र का पानी जमा हो गया है।

आदिम जन्तु

सस्तन जन्तुओं में, कई जन्तुओं का बहुत बड़ा शरीर था। इनमें से एक "मेगाथीरियम" था। अमेरिका के गरम प्रदेशों में, एक प्रकार का जन्तु पाया जाता है। उसके दान्त नहीं होते। वह पेड़ पर रहता है। वह मर जायेगा, पर हिलेगा नहीं। "मेगाथीरियम" इस जाति का जन्तु था। वह पृथ्वी पर रहा करता था। यह बैठने पर दस फुट का ऊँचा होता था। इसकी मोटी पूँछ होती थी। वह अगले पाँवों को हाथ की तरह काम में लाता, और बड़े बड़े पेड़ों को आसानी से तोड़ देता। वह शाकाहारी था।

"ग्लिस्टोडिन" उस जन्तु को कहते हैं, जिनके शरीर पर स्वाभाविक कवच-सा था। ये जन्तु, बैल के बराबर होते थे। सिर, पीठ, पूँछ, सभी जगह, हड्डियों का कवच-सा बना रहता। भूमि पर निवास करनेवला, सबसे बड़ा "बलूचि थीरयम" था। एशिया भू भाग में ही यह पाया जाता था, और आजकल के गैंड़ों का यह आदि जन्तु है। सस्तन जन्तुओं में कुछ जलचर भी शामिल थे। उनमें 'जाग्लोड़न' बहुत बड़ा था। इसकी लम्बाई ८० या ९० फीट थी। इसका शरीर बहुत चिकना होता था। यह आजकल के तिमिंगला का निकट बन्धु था।

आदिम सस्तन जन्तुओं से ही कुछ प्राकृतिक प्रक्रिया द्वारा आजकल के जन्तुओं में परिवर्तित हुये हैं। ये अभी लुप्त नहीं हुए हैं।

मेगाथीरियम

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

मई १९५८ :: पारितोषिक १०)
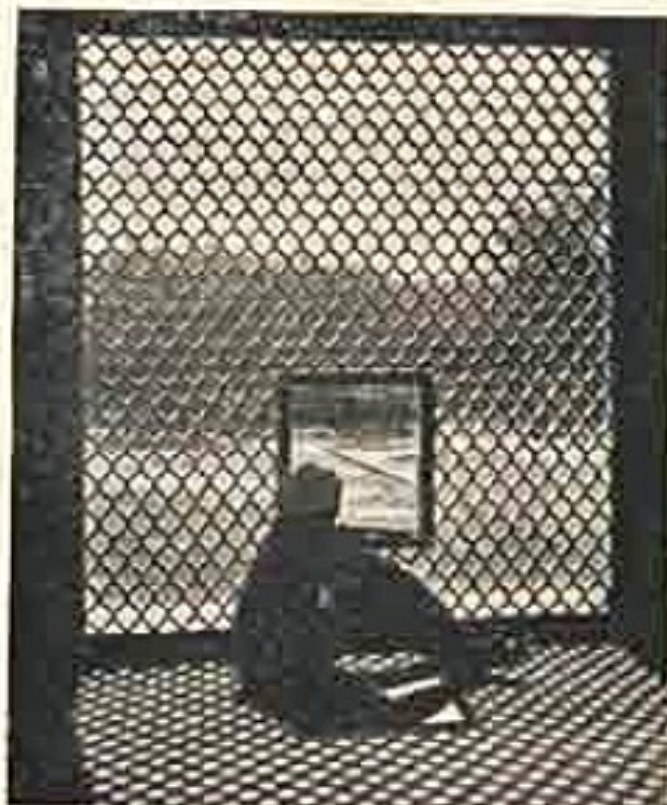
कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिख कर निम्नलिखित पते पर ता. १०, मार्च के अन्दर भेजनी चाहिये।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन
वडपलनी :: मद्रास - २६

मार्च – प्रतियोगिता – फल

मार्च के फ़ोटो के लिये निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं।

इनके प्रेषक को १० रु. का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो : **'तुम रहो यहाँ के यहाँ!'** दूसरा फ़ोटो : **'हम चलें कहाँ के कहाँ!!'**

प्रेषक : श्री निरंजन कुमार एन. शाह, श्री महाराजकुमार कालेज हॉस्टल, जोधपुर (राजस्थान).

शिक्षित मछली

जादूगर दर्शकों को बताता है कि उसने एक ऐसी सुनहली मछली पाल रखी है, जो ताश के पत्ते, अक्षर वग़ैरह पढ़ सकती है।

परदे के सामने, ठीक रंगमंच के बीचों-बीच मेज़ पर एक खुला मर्तबान रख दिया जाता है! मर्तबान के अन्दर कई सुनहली मछलियां तैरती नज़र आती हैं। तब जादूगर ताश के मिले-जुले पत्तों को मर्तबान में छोड़ता है। पत्ते कोई भी मिला सकता है। तब उपस्थित सज्जनों से पूछा जाता है कि मर्तबान में डाले गये किसी पत्ते का नाम बतायें। अगर वे "स्पेड" चाहते हैं, तो जादूगर शिक्षित सुनहली मछली को "स्पेड" चुनने के लिए कहता है। कहने की देर कि एक मछली, उस पत्ते को मुँह में दबाये तैरती दीखती है। (चित्र देखो)

अब इसका भेद बताया जाय। कांच का मर्तबान मामूली नहीं है, जैसा कि वह बाहर से दिखाई देता है। उस में एक गोल छेद कर लिया जाता है और उस छेद में से कांच का या

1

पारदर्शक सेल्यूलाइड का पात्र रख दिया जाता है। (छोटा खाका देखो) ए—वह भाग दिखाता है जो कि काटा गया है, और बी—पानी की सतह को बताता है, जहाँ तक कि पात्र के बाहर पानी भरा जा सकता है। पात्र और मर्तबान, कांच के बने हुये हैं, इसलिए बाहर से उन दोनों में कोई भेद नहीं दिखाई देता। असली सुनहली मछलियाँ, अन्दरूनी पात्र के बाहर ही तैरती दिखाई देती हैं, और ताश के पत्ते यहीं डाले जाते हैं। तब एक सेल्यूलाइड की सीखची लो, जो समकोण पर झुकी हुयी होनी चाहिये। इसके एक सिरे पर सेल्यूलाइड या किसी और चीज़ की बनी सुनहली मछली होती है। यह सारा काम, परदे के पीछे हुये हुये सहायक द्वारा, किया जाता है। (चित्र देखो) बाहर के मर्तबान में, यानी पानी में, असली मछलियाँ हैं। परन्तु यह नकली मछली अन्दरवाले पात्र में हैं, जिसमें बिल्कुल पानी नहीं है। देखनेवालों को यह सब न मालूम हो सकेगा। वे समझेंगे कि यह असली मछली ही है। सहायक ही ज़रूरी पत्ते को परदे के पीछे से चुनता है। वह
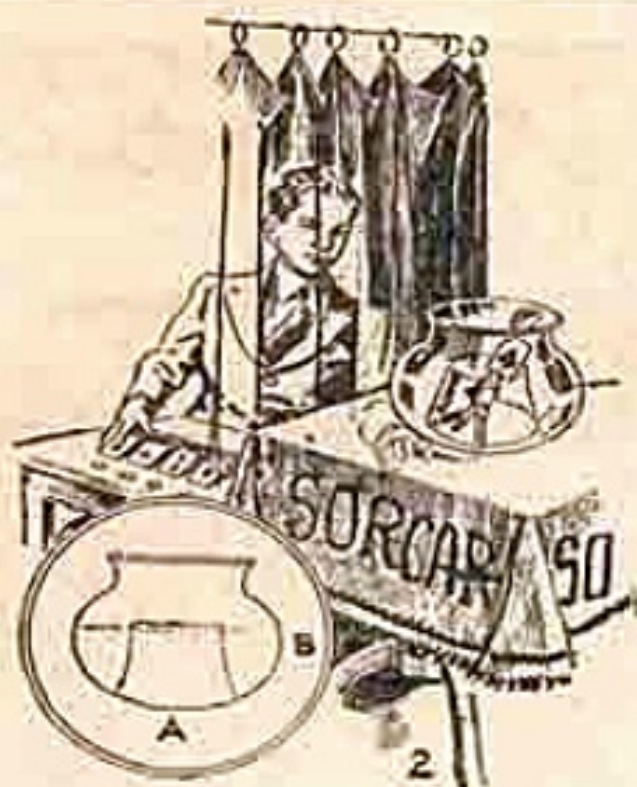
ही सेल्यूलाइड के सीखची के अन्त में बने मछली के मुँह में रखता है, और उसको मर्तबान के छेद में से अन्दर घुसा देता है। यह कहने की ज़रूरत नहीं कि मेज़ में, और मेज़पोश में, मर्तबान के छेद के बराबर छेद किये हुये होते हैं।

बताये गये पत्ते को आसानी से चुनने के लिए हम, परदे के पीछे पत्तों को चार ढेरों में रखते हैं—जैसे, डायमण्ड, हार्ट्स, स्पेड्स, और क्लब्स, ताकि चुना हुआ पत्ता तुरन्त मालूम हो सके।

उनका पता यों है :—

प्रो० पी. सी. सरकार

मेजीशियन, पो. बा. नं. ७८८८, कलकत्ता-१२

रंगीन चित्र-कथा

एक दिन का राजा—२

अबू की बात सुनकर खलीफ़ा ने कहा : "मुझे तुम्हारा बर्ताव ठीक ही मालूम होता है। ज़मीन-जायदाद का आधा बचा लेना तुम्हारी अक्लमन्दी को दिखाता है। तुम बड़े स्नेह-पात्र भी हो। हर रोज़ एक नये आदमी से स्नेह कर रहे हो। मैं तुम्हारे आतिथ्य के बदले कुछ देना चाहता था। परन्तु तुम मुझे कल ही भेज देना चाहते हो। क्या तुम्हारी कोई ऐसी इच्छा नहीं है, जो मुझ जैसा दोस्त पूरी कर सके!"

"आपसे, इस तरह मिल-जुलकर बातें करने के सिवाय मुझे कुछ नहीं चाहिये। इस ज़िन्दगी में न कुछ मैं चाहता हूँ, न किसी चीज़ की मुझे जरूरत है। इसलिये आप मेरा प्रत्युपकार करने की न सोचिये।"—अबू ने कहा।

थोड़ी देर बाद फिर खलीफ़ा ने कहा—"तुम्हारा सन्तोष सचमुच आश्चर्यजनक है। अगर कोई किसी से कुछ नहीं चाहता है, तो इसमें अचरज की कोई बात नहीं, पर इस ज़िन्दगी में कुछ न कुछ इच्छायें तो होती हैं—चाहें वे पूरी हों, या न हों। मैं यह जानना चाहता हूँ कि तुम जैसे व्यक्तियों में किस प्रकार की इच्छायें होती हैं। अगर तुमने प्रेमपूर्वक बताया तो मैं सुनकर आनन्दित होऊँगा।"

अबू थोड़ी देर सोचता रहा। फिर हँसकर उसने कहा—"यह बात सच है कि मुझ में एक इच्छा है, पर वह पूरी होनेवाली नहीं है। मैं एक रोज़ खलीफ़ा बनना चाहता हूँ।" "एक दिन के लिए खलीफ़ा बनकर तुम क्या कर देना

चाहते हो?"—खलीफ़ा ने उत्कण्ठा से पूछा।

"बग़दाद शहर में चार मोहल्ले हैं। चारों मोहल्लों के चार कोतवाल और चार पुर-पालक हैं। हमारे मुहल्ले का पालक बड़ा दुष्ट है। इस पालक के परिपालन में किसी स्त्री की आबरू नहीं बच सकती, किसी का आदर-गौरव नहीं है। कीचड़ में जिस तरह सूअर इधर उधर डोलता है, उसी तरह यह पुरपालक मनमानी कर रहा है। हमारे मोहल्ले को इसने नरक बना रखा है। इसके दो धूर्त दोस्त इस के दायें-बायें हाथ हैं। अगर एक दिन के लिए मैं खलीफ़ा बन गया, तो मुझे न पैसा चाहिये, न अधिकार ही। मैं इन तीनों नर-पशुओं को फाँसी पर चढ़ा दूँगा।"—अबू ने कहा।

यह सुन, खलीफ़ा अबू को और सम्मान की दृष्टि से देखने लगा। क्योंकि दुष्ट अधिकारियों पर सज्जनों को ही क्रोध आता है।

खलीफ़ा ने अबू की इच्छा पूरी करने की ठानी। बग़ैर उसके देखे उसने अबू के पानी में मस्ती की कोई दवा मिला दी। उसके पीते ही अबू अल हसन मूर्छित हो गया। खलीफ़ा, गुलामों से उसको उठवाकर अपने महल में ले गया।

जब अगले दिन, अबू अल हसन उठा तो खलीफ़ा के शयनागार में, मुलायम गद्दों पर वह लेटा था। जिधर देखो, उधर मखमल के परदे, रेशम के परदे थे। सोने-चान्दी की चीज़ें थीं। विचित्र पोशाक पहिने हर कोई उसको देखकर सलाम करते। खलीफ़ा के दर्शन के लिए, बाहर वज़ीर, सामन्त वग़ैरह प्रतीक्षा कर रहे थे। बिस्तर के पास एक मेज़ पर खलीफ़ा के पहिनने के लिए पोशाक रखी हुई थी।

भारत सरकार की तरफ़ से भारतीय भाषाओं की, प्रौढ़ साहित्य विषयक ४० सर्वोत्तम पुस्तकों पर पुरस्कार देने की घोषणा की गयी है। नक़द पुरस्कार के अतिरिक्त प्रत्येक पुरस्कृत पुस्तक की एक हज़ार प्रतियाँ भारत सरकार खरीदेगी। शिक्षा मंत्रालय ने इस बात पर विशेष ज़ोर दिया है कि पुस्तकें सरल शैली में लिखी होनी चाहिए।

* * *

समाचार पत्रों से ज्ञात हुआ कि बयालीस वर्षीय श्री तेनसिंग नोर्के फिर एवरेस्ट की चोटी पर चढ़ने के प्रयत्न में हैं। इस बार वे शेरपाओं के दल के साथ जाने का विचार कर रहे हैं। इधर वे अपने चुने हुए दल के लोगों के साथ सोला खुंबू नामक स्थान में पर्वत चोटी पर चढ़ने का अभ्यास करना भी आरंभ कर दिया है।

* * *

इधर कुछ समय पूर्व हैद्राबाद में २५ वर्षीया मुस्लिम महिला श्रीमती घौसिया बी के एक साथ दो लड़कियाँ पैदा हुईं, जो पेट और छाती से सटी हुई हैं। माँ और बच्चियाँ स्वस्थ हैं।

* * *

सन् १९५५ में सोवियत संघ के नगर तथा ग्राम्य निर्माण मंत्रालय ने शहरों और
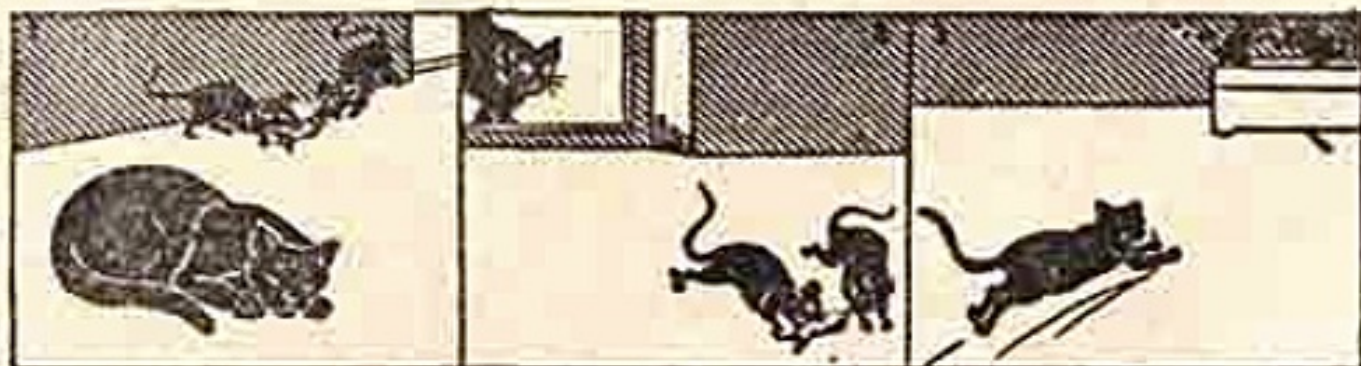
गाँवों में ७२० स्कूलों की इमारतें बनायीं, जिनमें आजकल तीन लाख से अधिक विद्यार्थी पढ़ते हैं।

* * *

हाल ही में मास्को में भारतीय बच्चों की एक कला प्रदर्शनी सम्पन्न हुई। कहा जाता है कि इन बच्चों की कलाकृतियों के रंगों के चुनाव में काफ़ी कौशल दिखाया गया है। इन नन्हें कलाकारों में किशनसेन (उम्र ४ वर्ष, दिल्ली); बीरेन हरि पटेल, (उम्र ६ वर्ष, पूना); कविता चक्रवर्ती, (उम्र ७ वर्ष, कलकत्ता); विश्वराज एम. चेट्टी, (उम्र ९ वर्ष, बम्बई); बी. नागराजा (उम्र ५ वर्ष, मद्रास) आदि के चित्र उल्लेखनीय हैं।

* * *

अमेरीका में एक लोकोमोटिव कम्पनी ऐसा आणविक बिजली घर तैयार कर रही है, जो पार्सल के रूप में एक स्थान से दूसरे स्थान को भेजा जा सकता है। इसके निर्माण में बीस लाख डालर से कुछ अधिक खर्च होगा तथा एक हज़ार किलोवाट विद्युत पैदा कर सकेगा।

* * *

समाचार पत्रों से मालूम होता है कि बहरों के लिए भारत सरकार की तरफ़ से एक राष्ट्रीय केन्द्र खोला जायगा। इसके अन्तर्गत बहरे बच्चों के लिए एक पाठशाला होगी और बहरापन का पता लगाने का एक गवेषणा केन्द्र भी होगा।

* * *

मध्य प्रदेश के राज्यपाल डा० श्री. पट्टाभि सीतारामय्या जी ने इधर अपने एक भाषण में कहा—"जब कभी मैं गुस्सा हो जाता, मेरी पत्नी बच्चे के हाथ में एक दर्पण देकर मेरे पास भेज देती है। इसने मुझ पर जादू का काम किया और मैं बदल गया।"

चित्र - कथा
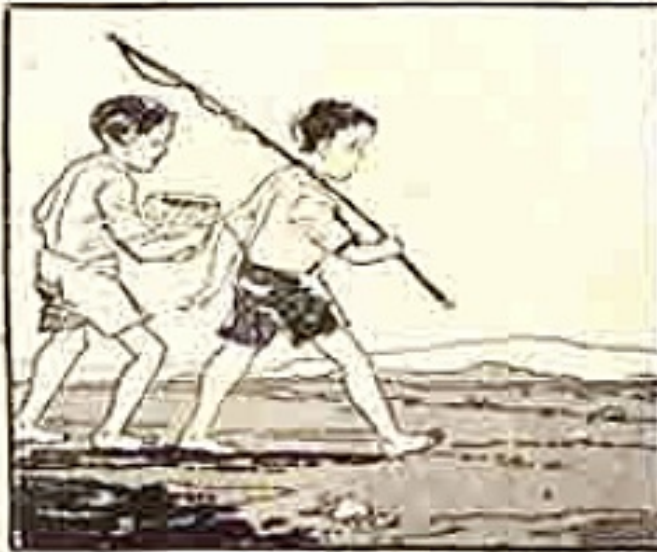
छुट्टी के एक दिन दास और वास बहुत बड़ी मछली पकड़ने के लिए बंसी आदि लेकर नदी की तरफ़ गये। साथ में 'टाइगर' भी था। उन्होंने 'टाइगर' की कमर में रबड़ का एक ट्यूब बाँध दिया था, ताकि वह नदी में डूब न जाय। वे दोनों बहुत देर तक मछली पकड़ने की कोशिश में किनारे पर बैठे रहे; पर काँटे में मछली नहीं फँसी। अन्त में जब बंसी भारी लगी तो दोनों ने बड़े ज़ोर से उसे ऊपर खींचा। मछली को मुँह में दबाये 'टाइगर' पानी में से निकल आया।

Printed by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press Ltd., Madras 26. and Published by him for Chandamama Publications, Madras 26. Controlling Editor: SRI 'CHAKRAPANI'

Photo by P. K. Patel

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

'हम चलें कहाँ के कहाँ!!'

प्रेषक
श्री निरंजन कुमार, जोधपुर

रंगीन चित्र-कथा चित्र — २